सेवा क्षेत्र

10
अध्याय

सेवा क्षेत्र एक दशक से भी अधिक समय से भारतीय अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख और प्रेरक शक्ति बनकर विकास को बढ़ावा देता आ रहा है। घरेलू अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की सक्रियता और भारत के विदेशी आर्थिक कार्यकलाप में इसी प्रमुख भूमिका के कारण ही हालिया वैश्विक आर्थिक संकट के खलबली भरे वर्षों से अर्थव्यवस्था सफलतापूर्वक बचकर निकल आई है।

10.2 सेवा क्षेत्र में सर्वाधिक परिष्कृत सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) से लेकर असंगठित क्षेत्र द्वारा प्रदत्त साधारण सेवाएं जैसे नाई तथा प्लम्बर की सेवाओं जैसे क्रियाकलापों की व्यापक श्रेणी शामिल है। सेवा क्षेत्र के राष्ट्रीय लेखा श्रेणीकरण में व्यापार, होटल तथा रेस्तरां, परिवहन, भंडारण, तथा संचार, वित्त पोषण, बीमा, स्थावर सम्पदा तथा व्यवसाय सेवाएं; तथा समुदाय, सामाजिक तथा वैयक्तिक सेवाएं समावेशित हैं। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) तथा भारतीय रिज़र्व बैंक श्रेणीकरणों में निर्माण को भी शामिल किया गया है।

सेवा क्षेत्र : अंतर्राष्ट्रीय तुलना

10.3 पारम्परिक सूझबूझ सुझाती है कि किसी भी देश के आरम्भिक विकास चरण के दौरान, विनिर्मित वस्तुओं में उत्पादन का विस्तार सेवा क्षेत्र में संवृद्धि से पूर्व होता है। जैसे-जैसे देश में और प्रगति होती है, विनिर्माण का स्थान पिछड़ जाता है तथा उसका स्थान उत्पादन तथा रोज़गार, दोनों के अर्थ में सेवा क्षेत्र ले लेता है तथा विनिर्माणकारी फर्में प्रतिस्पर्धी रहने के उद्देश्य से वर्धनात्मक रूप से सेवा-केन्द्रित बन जाती हैं। कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि विनिर्माण में गिरावट तथा सेवाओं की ओर तदनुरूपी अंतरण दीर्घावधि में असमर्थनीय है क्योंकि सेवाएं अपनी मांग की पूर्ति के लिए महत्वपूर्ण रूप से विनिर्माण पर निर्भर हैं। यद्यपि यह तर्क खुदरा बिक्री तथा परिवहन जैसी कतिपय सेवाओं के लिए प्रयोज्य हो सकता है, अनेक अन्य सेवाओं पर यह पूर्णतया लागू नहीं होता। आईटी के विस्तार के पीछे विनिर्माण की भूमिका के बजाए विनिर्माण में हालिया विस्तार के पीछे आईटी विशेष रूप से एक प्रमुख बल रहा है। हालांकि अंतर्राष्ट्रीय रूप से विकास की पारम्परिक सूझबूझ लागू होती है, भारतीय अर्थव्यवस्था के मामले में इसमें प्रतिवर्तन हो गया प्रतीत होता है जिसमें सेवा क्षेत्र विनिर्माण से पर्याप्त आगे निकल गया है। भारत के मामले में सेवा संवृद्धि से आय, मांग, प्रौद्योगिकी तथा संगठनात्मक अधिगम के जरिए सकारात्मक प्रभाव हुए हैं।

सेवा सकल घरेलू उत्पाद : अंतर्राष्ट्रीय तुलना

10.4 वर्ष 2010 में 63 ट्रिलियन विश्व सकल घरेलू उत्पाद में सेवाओं का हिस्सा लगभग 68 प्रतिशत था जिससे इसका स्तर वर्ष 2001 के स्तर के समरूप था। इस संकेतक के अर्थ में भारत का निष्पादन अन्य उदीयमान विकासशील अर्थव्यवस्थाओं से न केवल उच्चतर है बल्कि शीर्ष विकसित देशों के भी काफी सन्निकट है। वर्ष 2010 में उच्चतम समग्र सकल घरेलू उत्पाद वाले शीर्ष 12 देशों में भारत का स्थान समग्र सकल घरेलू उत्पाद तथा सेवा सकल घरेलू उत्पाद में क्रमशः 8 और 11 है। हालांकि यूनाईटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमरीका तथा फ्रांस जैसे देशों का सकल घरेलू उत्पाद में सेवाओं का 78 प्रतिशत से अधिक पर उच्चतम हिस्सा है, भारत का 57 प्रतिशत का हिस्सा चीन के 41.8 प्रतिशत के हिस्से की तुलना में कहीं अधिक है। वर्ष 2001 की तुलना में वर्ष 2010 में सकल घरेलू उत्पाद में सेवाओं के हिस्से में वृद्धि के अर्थ में भारत शीर्षस्थ देश (7 प्रतिशतांक) है जिसके पश्चात स्पेन तथा कनाडा (5.3 प्रतिशतांक प्रत्येक), यूके (4.5 प्रतिशतांक) तथा इटली (3.2 प्रतिशतांक) का स्थान है। 2001-10 की अवधि के लिए चक्रवृद्धि वार्षिक संवृद्धि दर (सीएजीआर) के अर्थ में, 11.3 प्रतिशत पर चीन तथा 9.4 प्रतिशत पर भारत ने अति उच्च सेवा क्षेत्र संवृद्धि दर्शाई है। 5.5 प्रतिशत पर रूस तथा 4.0 प्रतिशत

पर ब्राजील का स्थान कहीं पीछे क्रमशः तीसरे और चौथे स्थान पर है। हालांकि वर्ष 2009 में भारत की सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर 10.1 प्रतिशत पर चीन की 9.6 प्रतिशत की दर से उच्चतर थी, वर्ष 2010 में यह ह्रासित होकर 7.7 प्रतिशत रह गई है जबकि चीन की संवृद्धि दर सतत् रही है (सारणी 10.1)। यह सब भारत के लिए सेवा क्षेत्र की प्राबल्यता को विशिष्ट रूप से विनिर्दिष्ट करता है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में सेवाओं के उच्चतर हिस्से तथा सेवाओं की तुलना में विनिर्माण में चीन के प्राबल्य के बावजूद, यह एक कड़वा सच है कि सेवा सकल घरेलू उत्पाद के निरपेक्ष मूल्य के अर्थ में तथा साथ ही सेवाओं की वृद्धि के अर्थ में भी चीन वर्ष 2010 में भी भारत से आगे है।

सेवाओं में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

10.5 सेवाओं में वैश्विक व्यापार ने कमाधिक पण्य व्यापार में रुझान को तथा अनुषंगी रूप से अंतर्राष्ट्रीय मांग को प्रतिबिम्बित किया है। सेवाओं के वैश्विक निर्यातों ने 2000 दशक में सुसंगत संवृद्धि दर्शाई है जिसमें वैश्विक मंदी तथा आर्थिक संकट की 2001 तथा 2009 की अवधियों को छोड़ कर लगभग 9.5 प्रतिशत की सुदृढ़ वार्षिक औसत संवृद्धि हुई है। वर्ष 2008 में 13 प्रतिशत की वृद्धि (विश्व व्यापार संगठन के आंकड़ों के अनुसार) के पश्चात सेवाओं के वैश्विक निर्यातों में तीव्र गिरावट होकर वर्ष 2009 में सेवाओं के निर्यात में -12 प्रतिशत की ऋणात्मक वृद्धि हुई जिसमें वर्ष 2010 में 9 प्रतिशत की संवृद्धि के साथ पुनः उछाल आया। वर्ष 2010 में सेवा निर्यातों का मूल्य 3,695 बिलियन अमरीकी डालर था जो 2008 के संकट पूर्व के 3842 बिलियन अमरीकी डालर के चरम स्तर से थोड़ा ही कम था । हालांकि सेवाओं में विश्व व्यापार में विकसित देशों का प्राबल्य है, चीन तथा भारत जैसी उदीयमान अर्थव्यवस्थाएं अब वृद्धिकारी भूमिकाओं का निर्वहन कर रही हैं। भारत सर्वाधिक गतिशील सेवा निर्यातक है तथा वर्ष 2010 में सेवाओं के निर्यात तथा आयात, दोनो में विश्व में इसका स्थान सातवां था (ब्यौरों के लिए अध्याय 7 देखें)।

सेवा क्षेत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई)

10.6 वैश्विक आर्थिक तथा वित्तीय संकट का समग्र एफडीआई अंतर्वाहों पर अवमंदनकारी प्रभाव पड़ा था। सेवाओं में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, जो संकट के कारण एफडीआई अंतर्वाहों में गिरावट के प्रपुंज भाग के लिए उत्तरदायी था, वर्ष 2010 में अपने अधोगामी मार्ग पर जारी रहा। सभी मुख्य सेवा उद्योगों (व्यवसाय सेवाएं, वित्त, परिवहन तथा संचार एवं जनोपयोगिताएं) में एफडीआई में गिरावट आई। तथापि, यह गिरावट भिन्न-भिन्न दरों पर थी। समग्र रूप से

सारणी 10.1 : सेवाओं में निष्पादनः अंतर-राष्ट्रीय तुलना

देश	रैंक		समग्र सकल घरेलू उत्पाद (बिलियन अमरीकी डॉलर)		सेवाओं का हिस्सा (समग्र सकल घरेलू उत्पाद का (%)			सेवा वृद्धि दर (%)			
	समग्र सेवाएं										
	जीडीपी	जीडीपी	वर्तमान कीमतों पर 2010	सतत् कीमतों पर 2010	2001	2009	2000	2001	2009	2010	सीएजीआर 2001-10
1. संयुक्त राज्य	1	1	14447.1	13017.0	77.0	79.0	78.2	2.9	-1.4	1.2	1.8
2. जापान	2	2	5458.9	4578.5	69.8	71.7	70.0	2.0	-4.8	2.9	0.6
3. चीन	3	3	5739.4	3883.5	39.8	42.1	41.8	10.3	9.6	9.6	11.3
4. जर्मनी	4	4	3280.3	2945.8	69.7	73.7	72.5	2.1	-1.6	2.3	1.4
5. फ्रांस	6	5	2559.8	2208.6	76.5	78.9	78.1	1.7	-1.1	0.2	1.4
6. यूके	5	6	2253.6	2330.0	73.9	78.8	78.4	3.5	-3.2	1.1	2.0
7. इटली	7	7	2051.3	1744.0	70.1	73.6	73.3	2.3	-2.9	1.2	0.6
8. ब्राजील	11	8	2089.0	1092.6	65.3	67.6	66.8	1.8	3.0	4.8	4.0
9. स्पेन	10	10	1407.3	1180.7	65.7	70.5	71.0	3.4	-1.0	0.7	2.7
10. कनाडा	9	9	1577.0	1203.9	64.9	70.7	70.2	3.6	0.1	2.5	2.8
11. भारत	8	11	1722.3	1251.6	50.0	56.5	57.0	7.5	10.1	7.7	9.4
12. रूस	12	12	1479.8	905.2	63.3	62.0	61.5	3.2	-5.6	2.9	5.5
विश्व			**63064.0**	**51040.5**	**68.1**	**68.7**	**67.8**	**2.9**	**-0.9**	**2.5**	**2.6**

स्रोत : 8 फरवरी, 2012 को संयुक्त राष्ट्र राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी से परिकलित।

टिप्पणी : रैंक वर्तमान मूल्यों पर आधारित है।
हिस्सा सतत् कीमतों (अमरीकी डॉलर) पर आधारित है।
वृद्धि दरें सतत कीमतों (अमरीकी डॉलर) पर आधारित है।
सीएजीआर 2001-10 के लिए अनुमानित है।
निर्माण क्षेत्र को सेवा स.घ.उ. से बाहर किया गया है।

सेवा क्षेत्र में एफडीआई परियोजनाएं वर्ष 2009 में 392 बिलियन अमरीकी डालर से गिरकर वर्ष 2010 में 338 बिलियन अमरीकी डालर की रह गई जिसके परिणामस्वरूप इस अवधि में क्षेत्रक एफडीआई में इसका हिस्सा 33 प्रतिशत में घटकर 30 प्रतिशत रह गया। पूर्व संकट स्तरों की तुलना में व्यवसाय सेवाओं में 8 प्रतिशत की गिरावट हुई क्योंकि बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने जो अपने व्यवसाय सहायता कार्यों के वृद्धिकारी हिस्से का बहिस्रोतण कर रही हैं, आर्थिक मंदन के कारण अपने प्रचालन कम कर दिए। परिवहन तथा दूरसंचार सेवाओं को भी वर्ष 2010 में समतुल्य हानि हुई क्योंकि संकट से पूर्व बड़े विलयनों तथा अधिग्रहण सौदों के दौर के पश्चात उद्योग की पुनर्संरचना, विशेष रूप से विकसित देशों में, कमाधिक पूर्ण हो गई थी। वित्तीय उद्योग में एफडीआई में तीव्रतम गिरावट आई तथा मध्यमावधि में इसके मंदित बने रहने की आशा है। विगत दशक में इसका विस्तार वैश्विक वित्तीय प्रणाली में उदीयमान अर्थव्यवस्थाओं को एकीकृत करने, दक्षता तथा स्थिरता के अर्थ में मेजबान देशों की वित्तीय प्रणालियों को पर्याप्त लाभ पहुंचाने का माध्यम बना। जनोपयोगिताओं पर भी संकट का काफी अधिक प्रभाव पड़ा क्योंकि कुछ निवेशक अपेक्षाकृत निम्न मांग तथा संचयी हानियों के कारण निवेश कम करने अथवा निर्नहन करने के लिए भी विवश हो गए।

भारत का सेवा क्षेत्र

10.7 राष्ट्रीय तथा राज्यों के सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सा, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, रोजगार तथा निर्यातों जैसे विभिन्न संकेतक भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सेवा क्षेत्र का महत्व निर्दिष्ट करते हैं।

सेवा सकल घरेलू उत्पाद

10.8 घटक लागत (वर्तमान मूल्यों पर) पर भारत के सकल घरेलू उत्पाद में सेवाओं का हिस्सा 1950-51 में 33.5 प्रतिशत से बढ़ कर 2010-11 में 55.1 प्रतिशत हो गया था तथा अग्रिम अनुमानों (एई) के अनुसार 2011-12 में 56.3 प्रतिशत हो गया। यदि निर्माण को भी इस क्षेत्र में शामिल कर दिया जाए तो सेवा क्षेत्र का हिस्सा बढ़कर 2010-11 में 63.3 प्रतिशत तथा 2011-12 में 64.4 प्रतिशत हो जाता है। 16.9 प्रतिशत अंश के साथ समूह के रूप में व्यापार, होटलों तथा रेस्तरां विभिन्न सेवा उपक्षेत्रों में सकल घरेलू उत्पाद में सबसे बड़ा योगदाता हैं, जिसके पश्चात् 16.4 प्रतिशत हिस्से के साथ वित्तपोषण, बीमा, स्थावर सम्पदा तथा व्यवसाय सेवाओं का स्थान आता है। 14.3 प्रतिशत के अंश के साथ समुदाय, सामाजिक तथा वैयक्तिक-सेवाएं तृतीय स्थान पर हैं। निर्माण, जो एक सीमा रेखा समावेशन है, का स्थान 8.2 प्रतिशत हिस्से के साथ चौथा है (सारणी 10.2)।

सारणी 10.2 : घटक लागत पर (वर्तमान मूल्य) सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न सेवा वर्गों का हिस्सा

(प्रतिशत)

	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10@	2010-11*	2011-12**
व्यापार, होटल एवं रेस्तरां	**17.1**	**17.1**	**16.9**	**16.6**	**16.9**	**25.2 #**
व्यापार	15.4	15.4	15.3	15.1	15.4	
होटल एवं रेस्तरां	1.7	1.7	1.5	1.4	1.5	
परिवहन, भंडारण और संचार	**8.2**	**8.0**	**7.8**	**7.8**	**7.7**	
रेलवे	0.9	1.0	0.9	1.0	0.8	
अन्य साधनों से परिवहन	5.7	5.6	5.5	5.3	5.4	
भंडारण	0.1	0.1	0.1	0.1	0.1	
संचार	1.5	1.4	1.4	1.5	1.4	
वित्तपोषण, बीमा, स्थावर संपदा और व्यापार सेवाएं	**14.8**	**15.1**	**15.9**	**15.8**	**16.4**	**16.9**
बैंकिंग एवं बीमा	5.5	5.5	5.6	5.4	5.8	
स्थावर संपदा, आवासीय एवं व्यापार सेवाओं का स्वामित्व	9.3	9.6	10.3	10.4	10.6	
संचार, सामाजिक एवं निजी सेवाएं	**12.8**	**12.5**	**13.3**	**14.5**	**14.3**	**14.2**
लोक प्रशासन एवं रक्षा	5.2	5.1	5.8	6.7	6.3	
अन्य सेवाएं	7.6	7.4	7.5	7.9	7.9	
निर्माण	**8.2**	**8.5**	**8.5**	**8.2**	**8.2**	**8.1**
कुल सेवाएं (निर्माण को छोड़कर)	**52.9**	**52.7**	**53.9**	**54.7**	**55.1**	**56.3**
कुल सेवाएं (निर्माण सहित)	**61.0**	**61.2**	**62.4**	**63.0**	**63.3**	**64.4**

स्रोत: केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सीएसओ) आंकड़ों में परिकलित।

टिप्पणी: @ अनंतिम अनुमान * त्वरित अनुमाान ** अग्रिम अनुमाान

 # वर्ष 2011-12 के लिए व्यापार, होटल और रेस्तरां तथा परिवहन, भंडारण और संचार दोनों का हिस्सा शामिल है।

चित्र 10.1 सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर और सेवा क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद

स्रोत: सीएसओ आंकड़ों पर आधारित
नोट: @ पीई, *क्यूई, **एई

10.9 सतत् मूल्यों पर सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर वर्ष 1996-97 से सदैव समग्र सकल घरेलू उत्पाद की संवृद्धि दर से उच्च रही है, सिवाए वर्ष 2003-04 के जब ये दोनों दरें समाभिरूपित हो गई थी। इस प्रकार, विगत 15 वर्षों से यह क्षेत्र अर्थव्यवस्था की समग्र सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि से काफी अधिक वृद्धि के साथ पर्याप्त स्थिरता अर्थव्यवस्था की संवृद्धि को अभिप्रेरित कर रहा है (चित्र 10.1)।

10.10 वर्ष 2004-05 से वर्ष 2010-11 की अवधि के लिए 10.2 प्रतिशत पर सेवा क्षेत्र का सीएजीआर उसी अवधि के दौरान सघउ के 8.6 प्रतिशत सीएजीआर से उच्चतर रहा है जो स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करता है कि सेवा क्षेत्र में वृद्धि उद्योग तथा कृषि, दोनों क्षेत्रों से अधिक रही है। वर्ष 2009-10 तथा 2010-11 में सेवा क्षेत्र में क्रमशः 10.5 प्रतिशत तथा 9.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वर्ष 2011-12 में, सेवाओं की संवृद्धि दर 9.4 प्रतिशत (अग्रिम अनुमान) थी।

सेवाओं की राज्य-वार तुलना

10.11 वर्ष 2009-10 में विभिन्न राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों (यू०टी०) के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में सेवाओं के अंश की तुलना दर्शाती है कि भारत के अधिकांश राज्यों में सेवा क्षेत्र प्रबल क्षेत्र है (चित्र 10.2)। त्रिपुरा, नागालैंड, पश्चिम बंगाल,

चित्र 10.2 वर्ष 2009-10 में सेवा क्षेत्र का हिस्सा और वृद्धि

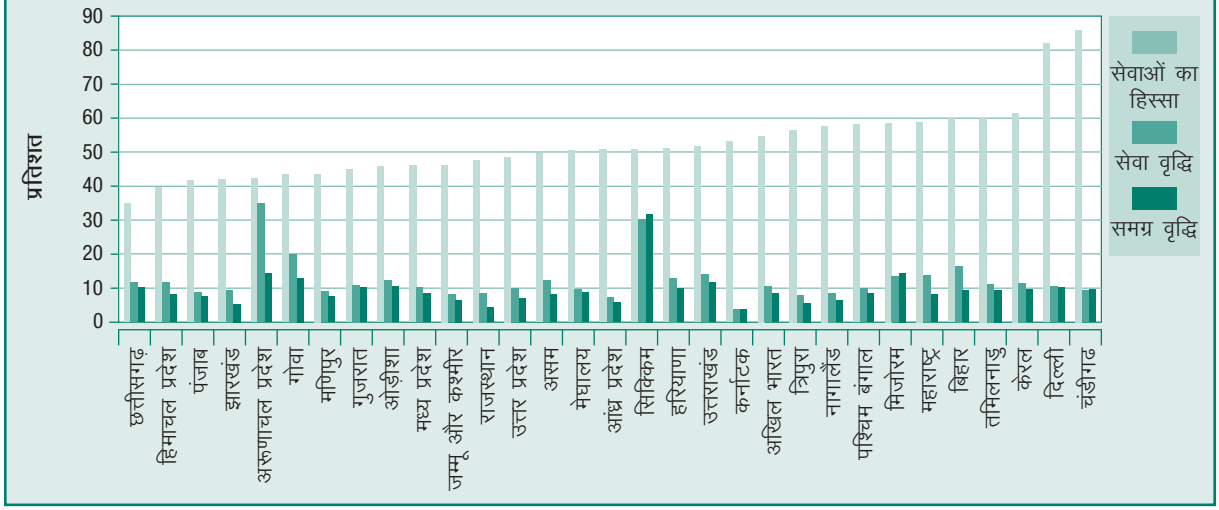

स्रोत : सीएसओ
टिप्पणी : नागालैंड के संबंध में आंकड़े वर्ष 2008-09 के लिए हैं।
हिस्से मौजूदा कीमतों पर, वृद्धि दर सतत् कीमतों (2004-05) पर आधारित हैं।

मिजोरम, महाराष्ट्र, बिहार, तमिलनाडु, केरल, दिल्ली तथा चण्डीगढ़ जैसे राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों का अंश अखिल भारत अंशों से उच्चतर है। 86 प्रतिशत अंश के साथ चण्डीगढ़ तथा 81.8 प्रतिशत अंश के साथ दिल्ली का स्थान सूची में सर्वोपरि है। छत्तीसगढ़ (34.8 प्रतिशत) तथा हिमाचल प्रदेश (39.6 प्रतिशत) को छोड़कर सभी अन्य राज्यों में सेवाओं का व्यष्टि अंश जीएसडीपी में 40 प्रतिशत से अधिक है। इस प्रकार भारत में सेवा क्रांति अधिक व्यापकाधारित बन रही प्रतीत हो रही है जिसमें अब तक पिछड़े राज्य भी इस क्षेत्र के अच्छे निष्पादन का अवलम्ब लेकर प्रगति की सीढ़ी पर ऊपर चढ़ रहे हैं।

10.12 सेवा क्षेत्र में सर्वाधिक संवृद्धि दरें अरुणाचल प्रदेश (34.9 प्रतिशत) तथा सिक्किम (30.1 प्रतिशत) के पूर्वोत्तर राज्यों में हैं। अन्य राज्यों में 20.1 प्रतिशत संवृद्धि के साथ गोवा तथा 16.6 प्रतिशत संवृद्धि के साथ बिहार का स्थान सूची में सबसे ऊपर है। यह वर्ष 2008-09 में उनकी अति उच्च संवृद्धि दरों के अलावा है। इस क्षेत्र में राष्ट्रीय औसत संवृद्धि से उच्चतर वृद्धि वाले अन्य राज्य केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र तथा मिज़ोरम है।

सेवा क्षेत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश

10.13 विदेशी प्रत्यक्ष निवेश सेवा क्षेत्र की गतिशील वृद्धि में प्रमुख भूमिका निभाता है, यद्यपि सेवा क्षेत्र के तहत विभिन्न क्रियाकलापों का श्रेणीकरण करने में अस्पष्टता इस क्षेत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अंतर्वाहों के मापन में कठिनाई प्रस्तुत करती है। वित्तीय तथा गैर-वित्तीय सेवाओं, कम्प्यूटर हार्डवेयर तथा साफ्टवेयर, दूरसंचार तथा आवास और स्थावर सम्पदा के संयुक्त एफडीआई अंश को सेवाओं के एफडीआई अंश का मोटा अनुमान माना जा सकता है, यद्यपि इस में सेवा-भिन्न तत्व भी शामिल किए जा सकते हैं। अप्रैल 2000-दिसम्बर 2011 की अवधि के दौरान यह अंश संचयी एफडीआई इक्विटी अंतर्वाहों का 41.9 प्रतिशत है। निर्माण क्षेत्र (6.5 प्रतिशत) को शामिल करने से, एफडीआई अंतर्वाहों में सेवाओं का अंश बढ़कर 48.4 प्रतिशत हो जाता है। यदि कुछ अन्य सेवाओं या सेवा संबद्ध क्षेत्रों जैसे होटल तथा पर्यटन (2.02 प्रतिशत), व्यापार (1.94 प्रतिशत), सूचना तथा प्रसारण (1.60 प्रतिशत), परामर्शी सेवाएं (1.21 प्रतिशत), पत्तन (1.04 प्रतिशत), कृषि सेवाएं (0.91 प्रतिशत), अस्पताल तथा नैदानिक केन्द्र (0.72 प्रतिशत) शिक्षा (0.30 प्रतिशत), हवाई परिवहन जिसमें हवाई माल ढुलाई भी शामिल है (0.27 प्रतिशत) तथा खुदरा व्यापार (0.03 प्रतिशत) के अंशों को भी शामिल कर लिया जाता है तो सेवा क्षेत्र में संचयी एफडीआई अंतर्वाहों का कुल अंश 58.4 प्रतिशत होगा। एफडीआई अंतर्वाहों में सामान्य रूझान का अनुसरण करते हुए सेवा क्षेत्रों (निर्माण सहित शीर्ष पांच क्षेत्र) में भी वर्ष 2009-10 तथा 2010-11 में मंदन हुआ है जब रुपये अर्थ में क्रमशः -7.5 प्रतिशत तथा -42.5 प्रतिशत की ऋणात्मक वृद्धि हुई। वर्ष 2011-12 में (अप्रैल-दिसम्बर) पुनः समग्र एफडीआई अंतर्वाहों के रूझान का अनुसरण करते हुए, जो 50.8 प्रतिशत बढ़कर 24.19 बिलियन अमरीकी डालर हो गया, शीर्ष पांच सेवा क्षेत्रों (निर्माण सहित) में भी एफडीआई अंतर्वाह 36.8 प्रतिशत बढ़कर 9.3 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गए। सेवाएं (वित्तीय तथा गैर-वित्तीय), दूर संचार, तथा निर्माण वर्ष 2011-12 (अप्रैल-दिसम्बर) में सेवा क्षेत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अंतर्वाहों के अग्रणी क्षेत्र हैं। अन्य दोनों सेवा क्षेत्रों में अंतर्वाह तुलनात्मक रूप से कम हैं। (सारणी 10.3)

सारणी 10.3 : अधिकतम प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी अंतर्वाह आकर्षित करने वाल क्षेत्र

(करोड़ ₹)

रैंक	क्षेत्र	2009-10	2010-11	2011-12 (अप्रैल-दिसम्बर)	संचित अंतर्वाह (अप्रैल 2000-दिसम्बर 2011)	कुल अंतर्वाह का प्रतिशत (अमरीकी डॉलर में)
1.	**सेवा क्षेत्र**	19945	15053	21431	142539	20.1
	(वित्तीय एवं गैर वित्तीय)	**(4176)**	**(3296)**	**(4575)**	**(31710)**	
2.	**दूरसंचार**	12270	7542	8969	57035	7.9
	(रेडियो पेजिंग, सैल्यूलर मोबाइल, बेसिक टेलीफोन सेवा)	**(2539)**	**(1665)**	**(1989)**	**(12544)**	
3.	**कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर**	4127	3551	2626	48940	6.9
		(872)	**(780)**	**(564)**	**(10973)**	
4.	आवास एवं स्थावर संपदा	14027	5600	2544	48819	6.9
		(2935)	**(1227)**	**(551)**	**(10933)**	
5.	**निर्माण कार्य**	13469	4979	7635	46216	6.5
	(सड़क एवं राजमार्ग सहित)	**(2852)**	**(1103)**	**(1602)**	**(10239)**	

स्रोत : औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग के आंकड़ों पर आधारित
टिप्पणी : कोष्ठक में दिए गए आंकड़े मिलियन अमरीकी डॉलर में हैं।

10.14 ये पांच सेवा क्षेत्र अर्थव्यवस्था में उच्चतम संचयी एफडीआई अंतर्वाह आकृष्ट करने वाले क्षेत्र भी हैं जिनमें वित्तीय तथा गैर वित्तीय सेवाएं अप्रैल 2000-दिसम्बर 2011 के दौरान 31.7 बिलियन अमरीकी डालर पर सूची में सर्वोपरि हैं। इनके पश्चात अन्य सेवा क्षेत्र-दूरसंचार, कम्प्यूटर साफ्टवेयर तथा हार्डवेयर, आवास तथा स्थावर सम्पदा हैं। अप्रैल 2000 से दिसम्बर 2011 के दौरान भारत में वित्तीय तथा गैर-वित्तीय सेवा क्षेत्र (जिनके लिए ब्यौरे वार आंकड़े उपलब्ध हैं) में एफडीआई अंतर्वाहों के लिए शीर्ष पांच स्रोत देश हैं—मारीशस, जो अकेले ही सेवा क्षेत्र में एफडीआई अंतर्वाहों के 39.7 प्रतिशत के लिए उत्तरदायी हैं, इसके पश्चात सिंगापुर (15.4 प्रतिशत), यू. के. (8.6 प्रतिशत), संयुक्त राज्य अमरीका (7.1 प्रतिशत) तथा जापान (4.5 प्रतिशत) हैं। यह कमाधिक कुल एफडीआई के सामान्य स्रोतण पैटर्न के समरूप है जिसमें शीर्ष पांच देशों का क्रम निर्धारण उसी समान क्रम में है। इन स्रोत देशों से कुल एफडीआई अंतर्वाहों में वित्तीय तथा गैर वित्तीय सेवा क्षेत्रक के हिस्से हैं—मारीशस 20.1 प्रतिशत, सिंगापुर 30.6 प्रतिशत, यू.के. 29.5 प्रतिशत, संयुक्त राज्य अमरीका 21.9 प्रतिशत, तथा जापान 11.9 प्रतिशत।

भारत का सेवा व्यापार

10.15 भारतीय रिज़र्व बैंक के भुगतान संतुलन आंकड़ों के अनुसार, भारत के सेवा निर्यात 2004-05 से 2010-11 की अवधि में पण्य निर्यात के 19.7 प्रतिशत सीएजीआर की तुलना में इसी अवधि के दौरान 20.6 प्रतिशत के सीएजीआर पर बढ़े। सेवा क्षेत्र के अंतर्गत, वित्तीय सेवाओं (52.8 प्रतिशत) तथा व्यवसाय सेवाओं (29.2 प्रतिशत) के सीएजीआर उच्चतर थे जबकि साफ्टवेयर का 21 प्रतिशत का सीएजीआर निम्न था। आकार के अर्थ में, साफ्टवेयर प्रमुख सेवा निर्यात श्रेणी है जिसका 2010-11 में कुल सेवा निर्यात में 41.7 प्रतिशत हिस्सा था। 21.4 प्रतिशत पर पण्य आयात के सी ए जी आर की तुलना में सेवाओं के आयात के लिए सी ए जी आर 20.2 प्रतिशत था। सेवा आयातों में साफ्टवेयर-भिन्न सेवाएं (22.6 प्रतिशत) तथा परिवहन (20.5 प्रतिशत) के उच्च सीएजीआर पर थे। सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में सेवाओं समाहित कुल व्यापार द्वारा प्रतिबिम्बित अर्थव्यवस्था का समग्र खुलापन 1997-98 में 25.4 प्रतिशत की तुलना में 2010-11 में 50.3 प्रतिशत पर खुलेपन का उच्चतर अंश दर्शाता है। केवल पण्य व्यापार पर आधारित खुलेपन का संकेतक वर्ष 1997-98 में 21.2 प्रतिशत की तुलना में वर्ष 2010-11 में 37.5 प्रतिशत है (अध्याय 7 भी देखें)।

भारत में सेवा रोज़गार

10.16 हालांकि कृषि क्षेत्र प्रमुख रोज़गार प्रदाता क्षेत्र बना हुआ है, सेवा क्षेत्र (निर्माण सहित) दूसरे स्थान पर है। भारत में रोज़गार तथा बेरोज़गारी संबंधी राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) की रिपोर्ट 2009-10 के अनुसार, ग्रामीण तथा शहरी भारत में नियोजित प्रत्येक 1000 लोगों में से प्रधान प्रास्थिति तथा अनुषंगी प्रास्थिति में सामान्यत: कार्यरत व्यक्तियों के आधार पर क्रमश: 679 तथा 75 लोग कृषि क्षेत्र में नियोजित हैं, 241 तथा 683 लोग सेवा क्षेत्र (निर्माण सहित) में नियोजित हैं तथा 80 एवं 242 लोग औद्योगिक क्षेत्र में नियोजित हैं।

10.17 राज्यवार, ग्रामीण भारत में विभिन्न क्षेत्रों के रोजगार के हिस्से में व्यापक अंतर हैं। जहां कुछ पूर्वोत्तर राज्यों जैसे सिक्किम, त्रिपुरा तथा मणिपुर में सेवा क्षेत्र में रोज़गार का बड़ा हिस्सा है, चण्डीगढ़ तथा दिल्ली जैसे शहरी राज्यों में भी 1000 नियोजित लोगों में से क्रमश 826 तथा 879 का बहुत अधिक हिस्सा हैं। प्रमुख राज्यों में, केरल में सेवा क्षेत्र में प्रति हज़ार व्यक्ति पर 511 व्यक्तियों पर रोज़गार में अच्छा खासा हिस्सा है। निर्माण व्यापार, होटल तथा रेस्तरां; तथा लोक प्रशासन, शिक्षा तथा समुदाय सेवाएं विभिन्न राज्यों में तीन प्रमुख रोज़गार प्रदाता सेवा क्षेत्र हैं। शहरी भारत में, सेवाओं में रोज़गार का हिस्सा अधिकतर राज्यों में काफी अधिक हैं (सारणी 10.4)

भारत में सेवा संबंधी आंकड़े

10.18 पिछले वर्ष की आर्थिक समीक्षा में, सेवा संबंधी आंकड़ों की उपलब्धता तथा गुणता से जुड़ी कमज़ोरियों पर विशिष्ट प्रकाश डाला गया था। दोहराने पर ये कमियां इस प्रकार हैं—सेवा क्षेत्र उत्पादन के सूचकांकन के संकलन में कठिनाइयां, थोक कीमत सूचकांक के परिकलन में अनेक सेवा क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व न होना, सेवाओं के कीमत निर्धारण संबंधित प्रकाशित आंकड़ों की सीमित उपलब्धता तथा सेवाओं में व्यापार संबंधी सीमित आंकड़े। जहां आंकड़े उपलब्ध भी हैं, उनमें परिभाषा, संग्रहण की विधि, कीमत निर्धारण हेतु उपयुक्तता तथा सूचकांक के निर्माण से जुड़ी कमियां हैं। सेवा क्षेत्र के आंकड़ों को सुंप्रवाही बनाने के लिए किए गए हालिया प्रयास (बाक्स 10.1) स्वागत योग्य होते हुए भी क्षेत्र में विशेषज्ञों की सहायता से समन्वित रूप से त्वरित किए जाने आवश्यक हैं।

सेवा उप-क्षेत्रों का निष्पादन

10.19 केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के अग्रिम अनुमानों के अनुसार, भारत के सेवा क्षेत्र में निर्माण को छोड़कर तथा निर्माण समाहित वर्ष 2010-11 में क्रमश: 9.3 तथा 9.2 प्रतिशत की तथा वर्ष 2011-12 में क्रमश: 9.4 तथा 8.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह समग्र वृद्धि दर से लगभग 2 प्रतिशतांक अधिक है। व्यापक श्रेणीवार, ''व्यापार, होटल तथा रेस्तरां, परिवहन, भंडारण तथा संचार'' श्रेणी की संवृद्धि 11.2 प्रतिशत पर उच्चतम थी, जिसके

सारणी 10.4 : 2009-10 में ग्रामीण और शहरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में राज्य-वार रोजगार

(प्रति 1000 नियोजित व्यक्ति)

राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	कृषि और संबद्ध		उद्योग		निर्माण सहित सेवाएं		निर्माण को छोड़कर सेवाएं	
	ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी
आंध्र प्रदेश	687	53	97	241	217	705	150	583
अरूणाचल प्रदेश	757	140	32	41	213	817	158	722
असम	725	27	38	137	257	833	222	757
बिहार	669	146	53	121	279	732	174	609
छत्तीसगढ़	849	53	39	282	112	666	83	553
दिल्ली	0	1	120	285	879	712	542	682
गोवा	239	14	365	289	397	696	353	552
गुजरात	783	53	62	306	156	641	112	576
हरियाणा	598	53	98	319	304	627	195	511
हिमाचल प्रदेश	629	85	53	149	320	767	167	676
जम्मू और कश्मीर	597	110	84	227	316	662	218	552
झारखंड	548	52	92	160	361	787	145	602
कर्नाटक	757	94	67	221	176	686	132	558
केरल	357	110	132	178	511	711	357	570
मध्य प्रदेश	824	98	48	203	128	700	62	569
महाराष्ट्र	794	47	52	236	154	716	116	638
मणिपुर	534	205	90	118	377	677	240	604
मेघालय	707	58	56	65	236	877	178	780
मिजोरम	806	360	14	53	180	587	128	499
नागालैंड	741	219	17	35	241	745	200	684
उड़ीशा	676	103	84	215	240	683	144	549
पंजाब	618	83	81	249	298	669	168	552
राजस्थान	633	70	54	186	312	743	110	595
सिक्किम	539	0	48	99	414	901	282	874
तमिलनाडु	637	136	117	276	246	586	146	482
त्रिपुरा	306	21	63	89	633	891	244	716
उत्तराखंड	695	54	41	199	263	747	131	629
उत्तर प्रदेश	669	91	76	257	257	653	134	551
पश्चिम बंगाल	563	36	173	279	265	683	206	621
अं.और नि. द्वीपसमूह	430	30	91	98	477	873	330	766
चंडीगढ़	31	22	145	122	826	856	629	778
दादरा और नागर हवेली	591	38	160	632	251	332	155	315
दमन ओर दीयु	548	394	340	177	110	430	106	398
लक्षद्वीप	452	277	57	164	491	558	361	483
पांडिचेरी	461	29	144	201	396	770	238	647
अखिल भारत	**679**	**75**	**80**	**242**	**241**	**683**	**147**	**582**

स्रोत : उद्योग में 'निर्माण' को शामिल नहीं किया गया है।
टिप्पणी : एनएसएसओ की रिपोर्ट संख्या 537:2009-10 में भारत में रोजगार और बेरोजगारी की प्रास्थिति से संकलित

वर्ष 2011-12 में वित्त पोषण, बीमा, स्थावर सम्पदा, तथा व्यवसाय सेवाएं'' का स्थान 9.1 प्रतिशत था। व्यापार तथा स्थांवर सम्पदा, वासस्थलों का स्वामित्व तथा व्यवसाय सेवाएं 2010-11 में क्रमश: 15.4 प्रतिशत तथा 10.6 प्रतिशत के अंश के साथ दो प्रमुख उप-क्षेत्रक थे। इन दोनों क्षेत्रों का हिस्सा विगत वर्षों में कमाधिक स्थिर रहा है। वर्ष 2010-11 में, पूर्ववर्ती क्षेत्र की वृद्धि 9.1 प्रतिशत पर तथा पश्चोक्त की 6.9 प्रतिशत पर संतुलित वृद्धि अच्छी रही है। बैंकिंग तथा बीमा द्वारा अनुसरित संचार क्रमश: 27.2 प्रतिशत, तथा 14.5 प्रतिशत की संवृद्धि ने साथ विगत वर्षों में सर्वाधिक तीव्र वृद्धिकारी उप क्षेत्र रहे हैं। (सारणी 10.5)। अन्य सेवाओं में जिनका भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 8 प्रतिशत का हिस्सा है, शिक्षा, चिकित्सा और स्वास्थ्य, तथा वैयक्तिक सेवाएं हिस्सों के अर्थ में प्रमुख मदें हैं। यह रुचिकर है कि उच्च वृद्धि दरों वाली कुछ मदों के लघु हिस्से हैं जो बढ़ रहे हैं। इनमें अध्यापन केन्द्र है जिनमें विगत पांच वर्ष में 18 प्रतिशत से अधिक की संवृद्धि हुई है तथा अन्य सेवाओं में जिनका हिस्सा 2005-06 में 4.9

बॉक्स 10.1 : भारत में सेवा संबंधी आंकड़ों के संग्रहण हेतु किए गए हालिया प्रयासों की अद्यतन जानकारी

सेवा उत्पादन सूचकांक (आईएसपी):—सांख्यिकी तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन ने तकनीकी परामर्शी समिति (टीएसी) के मार्गदर्शन से आईएसपी के संकलन के लिए एक प्रविधि विकसित की। टीएसी ने रेलवे, हवाई परिवहन, डाक सेवाएं, बैंकिंग, दूर संचार इत्यादि जैसे कुछ उप-क्षेत्रकों को, जो आंकड़ों की उपलब्धता के अर्थ में अधिक संगठित हैं, प्राथमिकता देते हुए चरणबद्ध रूप से अर्थव्यवस्था के विभिन्न उप-क्षेत्रों के लिए आई एस पी के संकलन का परामर्श दिया। आई एस पी सतत् कीमतों पर प्रमात्रा सूचकांक है। अधिक सटीक रूप में इसे किसी निर्धारित अवधि में सेवा उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पादन की प्रमात्रा का विनिर्दिष्ट आधार अवधि में उन्ही उद्योगों द्वारा उत्पादित प्रमात्रा के प्रति अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है, नियमित सर्वेक्षणों की अनुपस्थिति में, आईएसपी द्वारा सेवा क्षेत्र की संवृद्धि का निर्धारण करने में एक अल्पावधि उपाय के रूप में कार्य करने की संभावना है। आधार वर्ष 2004-05 के साथ 2005-06 से 2010-11 की अवधि को शामिल करते हुए रेलवे तथा हवाई परिवहन के उप क्षेत्रों के लिए प्रायोगिक मासिक/त्रैमासिक/वार्षिक आईएसपी को अंतिम रूप दे दिया गया है तथा मंत्रालय की वेबसाईट पर अपलोड कर दिया गया है। रेल परिवहन, जिनकी वृद्धि दर 2010-11 में 6.4 प्रतिशत थी, के लिए सूचकांकों के वार्षिक औसत मान विगत वर्षों में बढ़ोतरी का रुझान दर्शाते हैं। हवाई परिवहन, जिसकी वृद्धि दर 2010-11 में 18.2 प्रतिशत थी, के वार्षिक औसत मान भी विगत वर्षों में बढ़ोतरी का रुझान दर्शाते हैं।

सेवा कीमत सूचकांक (एसपीआई) : प्रायोगिक एसपीआई के विकास के लिए आरम्भिक चरण में दस क्षेत्र अभिज्ञात किए गए हैं तथा एसपीआई का विकास करने के लिए सात क्षेत्रों के लिए प्रविधियों को अंतिम रूप दे दिया गया है। बैंकिंग सेवाएं, रेल परिवहन, डाक सेवाएं तथा दूर संचार संबंधी संकल्पना कागज़ात तैयार किए गए हैं तथा टिप्पणियों हेतु सरकारी वेबसाईट पर अपलोड किए गए हैं। रेलवे तथा बैंकिंग क्षेत्रों के लिए प्रायोगिक सूचकांकों को क्रमश: रेलवे बोर्ड तथा भारतीय रिज़र्व बैंक के परामर्श से अंतिम रूप दिया जा रहा है।

सेवाओं में व्यापार आंकड़े:—वर्तमान प्रणाली में, सेवाओं में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संबंधी आंकड़े देशवार पृथक पृथक स्तर पर तथा सेवाओं में व्यापार संबंधी सामान्य समझौता वार्ताओं के लिए आवश्यक डब्ल्यू-120 श्रेणीकरण के अनुसार उपलब्ध नहीं हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक ने अप्रैल 2011 से 45 दिनों के अंतराल पर सेवाओं में व्यापार संबंधी आंकड़े निर्मुक्त करना आरम्भ कर दिया है। हालांकि भारतीय रिज़र्व बैंक हालिया वर्षों में अधिक पृथक्कृत स्तर पर सेवाओं संबंधी डाटा उपलब्ध करा रहा है, इसने 2010-11 की पहली तिमाही से आरम्भ करते हुए सेवाओं में व्यापार संबंधी पृथक्कृत त्रैमासिक आंकड़े भी उपलब्ध कराना आरम्भ कर दिया है। कुछ प्रमुख सेवाओं के व्यापार में आंकड़ा उपलब्धता निम्नानुसार है। परिवहन सेवाओं से जुड़े आंकड़े इलेक्ट्रानिक रिपोर्टिंग प्रणाली के जरिए विदेशी मुद्रा लेनदेन (एफईटी ईआरएस) प्रयोजन कोड के तहत रिपोर्ट करने वाले प्राधिकृत डीलरों (एडी) से प्राप्त किया जाता है। वर्तमान में, माल भाड़ा तथा यात्रियों को पृथक्कृत नहीं किया जाता बल्कि उन्हें जोड़ दिया जाता है तथा भुगतान संतुलन सांख्यिकी में परिवहन की विधि के अनुसार दर्शाया जाता है। यात्रा से जुड़े आंकड़े भी इसी तरीके से प्राप्त किए जाते हैं, जिनमें प्राप्ति पक्ष संबंधी आंकड़े कम हैं जबकि भुगतान पक्ष पर वे पर्याप्त हैं। भुगतान संतुलन के लिए यात्रा प्राप्तियां पर्यटक आगमन के संबंध में पर्यटन मंत्रालय के आंकड़ों पर आधारित हैं। भारत के भुगतान संतुलन में, दूरसंचार, कम्प्यूटर तथा सूचना सेवा श्रेणी को संचार, साफ्टवेयर तथा समाचार अभिकरण शीर्षों के तहत पृथक पृथक प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक श्रेणी के तहत जमा तथा नामे संबंधी आंकड़े भी एफईटीआरएस के जरिए अभिगृहीत किए जाते हैं। कम्प्यूटर सेवाओं के संबंध में, आंकड़े साफ्टवेयर सेवाओं के रूप में प्रस्तत किए जाते हैं तथा क्रेडिट आंकड़ों का स्रोतण एफईटीईआरएस आंकड़ों में कमियों के कारण नैसकॉम से किया जाता है। साफ्टवेयर सेवाओं के नामे पक्ष के आंकड़े एफईटीईआरएस से प्राप्त होते हैं। ''भारत में विदेशी सहयोग'' के संबंध में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा संचालित तथा प्रकाशित सर्वेक्षण में विदेश संबद्ध सांख्यिकी (एफएटीएस) शामिल है। एफएटीएस द्वारा बहुराष्ट्रिक उद्यमों के निवासी (आवक) तथा अनिवासी (जावक) एफिलिएट्रों का टर्नओवर, वस्तुओं तथा सेवाओं का निर्यात और आयात, मूल्यवर्द्धन तथा रोज़गार मापा जाता है। वर्तमान में, एमओएसपीआई द्वारा स्थापित सेवाओं में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संबंधी आंकड़ों के नियमित संग्रहण तथा संकलन के लिए सांस्थापिक प्रक्रम के सुदृढ़ीकरण संबंधी विशेषज्ञ समूह के मार्गदर्शन के तहत सेवाओं में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में दो प्रायोगिक सर्वेक्षण आरम्भ किए गए हैं—एक स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए तथा दूसरा शिक्षा के लिए विशेषज्ञ समूह अपनी अंतिम रिपोर्ट इन प्रायोगिक सर्वेक्षणों के पूरा होने के बाद प्रस्तुत।

प्रतिशत से बढ़कर 2010-11 में 8.4 प्रतिशत हो गया है; मनोरंजन तथा मनोविनोद सेवाओं में विगत पांच वर्षों में 9 प्रतिशत की सुस्थिर वृद्धि हुई है तथा अन्य सेवाओं में हिस्सा वर्ष 2005-06 में 5.4 प्रतिशत से बढ़कर 2010-11 में 6.1 प्रतिशत हो गया है तथा परम्परागत दर्जीगिरी में विगत पांच वर्षों में 13 प्रतिशत की सुस्थिर वृद्धि हुई है तथा अन्य सेवाओं में इसका हिस्सा 2005-06 में 3 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2010-11 में 4.1 प्रतिशत हो गया है।

10.20 विभिन्न संकेतकों पर आधारित विभिन्न सेवाओं का निष्पादन दर्शाता है कि दूरसंचार, पर्यटन तथा रेलवे जैसे क्षेत्रों का निष्पादन वर्ष 2011-12 में अच्छा रहा है (सारणी 10.6)। सीमित फर्म स्तरीय आंकड़ों पर आधारित सेवा क्षेत्रक का निष्पादन एवं दृष्टिकोण यद्यपि अस्पष्ट है तथा अनुमानों एंव पूर्वानुमानों पर आधारित होने पर भी इस तथा आगामी वर्ष के लिए एक मिश्रित चित्र दर्शाता है (बाक्स 10.2)।

कुछ प्रमुख सेवाओं का निष्पादन

व्यापार

10.21 व्यापार एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य है जो उत्पादक और उपभोक्ता के बीच संपर्क बनाता है। सतत् कीमतों पर भारत के स. घ.उ. में व्यापार का मूल्य (संगठित और असंगठित क्षेत्रों में थोक और खुदरा व्यापार को शामिल करके) 2004-05 में 433,967 करोड़ रु॰ से 9.4 प्रतिशत की सीएजीआर दर पर बढ़कर 2010-11 में 742,621 करोड़ रु॰ हो गया। केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के त्वरित अनुमानों के अनुसार 2010-11 में वृद्धि दर 9.1 प्रतिशत थी। स. घ.उ. में व्यापार का हिस्सा पिछले छ: वर्षों में 15 प्रतिशत से थोड़ा अधिक रहा है (2010-11 में 15.4 प्रतिशत)। पिछले पांच वर्षों में अधिक स.घ.उ. वृद्धि होने और उपभोग करने वाली जनसंख्या में अधिक वृद्धि होने से, खुदरा कारोबार को पिछले कुछ समय से

सारणी 10.5 : घटक लागत पर (स्थिर कीमतों पर) भारत की सेवाओं के सकल घरेलू उत्पाद में वार्षिक वृद्धि

(प्रतिशत)

	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10@	2010-11*	2011-12**
व्यापार, होटल एवं रेस्तरां	**12.2**	**11.1**	**10.1**	**5.7**	**7.8**	**9.0**	**11.2#**
व्यापार	11.6	10.8	9.8	6.7	8.3	9.1	
होटल एवं रेस्तरां	17.4	14.4	13.0	-3.3	2.8	7.7	
परिवहन, भण्डारण एवं संचार	**11.8**	**12.6**	**12.5**	**10.8**	**14.8**	**14.7**	
रेलवे	7.5	11.1	9.8	7.7	9.4	6.8	
अन्य साधनों द्वारा परिवहन	9.3	9.0	8.7	5.3	7.2	8.4	
भंडारण	4.7	10.9	3.4	14.1	8.7	7.9	
संचार	23.5	24.3	24.1	25.1	31.7	27.2	
वित्तपोषण, बीमा, संपदा एवं व्यापार सेवाएं	**12.6**	**14.0**	**12.0**	**12.0**	**9.4**	**10.4**	**9.1**
बैंकिंग एवं बीमा	15.8	20.6	16.7	14.0	11.3	14.5	
संपदा, आवासों का स्वामित्व तथा व्यापार सेवाएं	10.6	9.5	8.4	10.4	7.8	6.9	
समुदाय, सामाजिक एवं वैयक्तिक सेवाएं	**7.1**	**2.8**	**6.9**	**12.5**	**12.0**	**4.5**	**5.9**
लोक प्रशासन एवं रक्षा	4.3	1.9	7.6	19.8	18.2	1.3	
अन्य सेवाएं	9.1	3.5	6.3	7.4	7.2	7.3	
विनिर्माण	**12.8**	**10.3**	**10.8**	**5.3**	**7.0**	**8.0**	**4.8**
कुल सेवाएं (निर्माण को छोड़कर)	**10.9**	**10.1**	**10.3**	**10.0**	**10.5**	**9.3**	**9.4**
कुल सेवाएं (निर्माण सहित)	**11.1**	**10.1**	**10.3**	**9.4**	**10.0**	**9.2**	**8.8**
जोड़ स.घ.उ.	**9.5**	**9.6**	**9.3**	**6.7**	**8.4**	**8.4**	**6.9**

स्रोत : सीएसओ आंकड़ों से परिकलित
टिप्पणियां: @ अनंतिम अनुमान। **त्वरित अनुमान ** अग्रिम अनुमान।
 # 2011-12 के लिए व्यापार, होटल और रेस्तरां तथा परिवहन, भंडारण और संचार दोनों का हिस्सा शामिल है।

अर्थव्यवस्था में उदीयमान क्षेत्रों में से एक माना जाता है। ए.टी. कीयरनी, जो एक अंतरराष्ट्रीय प्रबंधन परामर्शदात्री फर्म है, ने भारत की पहचान एक शीर्षस्थ खुदरा गंतव्य स्थल के रूप में की है। वर्ष 2006 से भारत एकल ब्रांड खुदरा में 51 प्रतिशत की सीमा तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अनुमत कर रहा है। जनवरी 2012 में, सरकार ने एकल-ब्रांड खुदरा क्षेत्र में 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति देते हुए, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से सभी प्रतिबंध हटा लिए।

10.22 बहुल ब्रांड खुदरा में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश करने की अनुमति देना इस क्षेत्र के मुख्य मुद्दों में से एक है। इसकी शुरूआत, मौजूदा 'मॉम एण्ड पॉप स्टोरों (किराना दुकानों) को आधुनिक बनाने के लिए और खुदरा दुकानों चाहे वे विदेशी हो या घरेलू, के साथ कारगर रूप से प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए उन्हें प्रोत्साहन देने के साथ-साथ महानगरों में एक चरणबद्ध तरीके से छोटे स्तर पर सीमा लगाकर की जा सकती है। यद्यपि आधुनिक खुदरा व्यापार की संवृद्धि के साथ कृषिय विपणन में अत्यधिक सुधार हो सकता है, सरकार के राजस्व में भी वृद्धि हो सकती है, क्योंकि वर्तमान में खुदरा क्षेत्र मुख्यतया असंगठित है और कर अनुपालन कम है। भारत सरकार के मुद्रास्फीति संबंधी अंतर-मंत्रालयीन समूह ने भी खाद्य मुद्रास्फीति की उच्च दरों और भारतीय किसानों द्वारा वसूली गई कम कीमतों से संबंधित मुद्दों का समाधान करने तथा कृषिय उत्पाद के लिए पश्च फसल अवसंरचना में निवेश अंतरालों पर ध्यान देने के लिए एक साधन के रूप में बहुल-ब्रांड खुदरा में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को बढ़ावा देने की सिफारिश की है।

पर्यटन, होटल और रेस्तरां

10.23 पर्यटन न केवल एक संवृद्धि इंजिन है बल्कि एक निर्यात संवृद्धि इंजिन और रोजगार का सृजन करने वाला भी है। इस क्षेत्र में, समाज के विविध वर्गों के लिए, सर्वाधिक विशेषज्ञों से लेकर अकुशल कार्यबल तक, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, दोनों प्रकार के रोज़गार का बड़े पैमाने पर सृजन करने की क्षमता है। यह क्षेत्र संयुक्त राष्ट्र के विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार प्रत्यक्ष रूप से विश्व की कुल नौकरियों में से 6-7 प्रतिशत और गुणांकन प्रभाव

बॉक्स 10.2 : सेवा फर्मों का निष्पादन: एक क्षेत्रीय विश्लेषण

सेन्टर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी (सीएमआईई) का फर्म स्तर के आंकड़ों पर आधारित सेवा कार्यकलापों के क्षेत्र-वार निष्पादन का विश्लेषण यहां दिया गया है। 2011-12 और 2012-13 के आंकड़े प्राक्कलनों तथा पूर्वानुमानों पर आधारित हैं।

परिवहन संभार-तंत्र: परिवहन संभार-तंत्र सेवा उद्योग की बिक्रियों का वर्ष 2010-11 के दौरान लाभप्रद 17.5 प्रतिशत की दर से बढ़ना अनुमानित हैं। यह वृद्धि उच्चतर कार्गो प्रमात्रा तथा बेहतर वसूलियों के संयोजन से प्राप्त की जानी संभावित है। 2011-12 में समग्र रूप से इस क्षेत्र की बिक्रियों में 9.6 प्रतिशत तथा कर उपरांत लाभ (पैट) में 17.8 प्रतिशत की वृद्धियां अनुमानित हैं। 2012-13 में बिक्री 9.9 प्रतिशत और पीएटी के 11.1 प्रतिशत की दर से बढ़ने की संभावना है।

पोत परिवहन: 2010-11 में पोत परिहवन क्षेत्र की बिक्रियां 4.8 प्रतिशत गिर गईं। वर्ष 2011-12 में समग्र रूप से पोत परिवहन क्षेत्र के एक सतुलित 2.9 प्रतिशत की दर पर बढ़ने की संभावना है। विनिमय दर में उतार-चढ़ार और पत्तन तथा ऑफशोर प्रचालनों का महत्वपूर्ण योगदान होने और वर्ष के दौरान इस क्षेत्र की कुल बिक्रियों को एक सहायता स्तर प्रदान करने की संभावना है। तथापि, इस उद्योग के पैट के एक असाधारण 75.7 प्रतिशत से गिरने की संभावना है, जिसका मुख्य कारण अधिक कमजोर भारतीय रुपए के आलोक में ब्याज खर्चों में तीव्र गिरावट होना है। 2012-13 के दौरान बिक्रियां का 5.7 प्रतिशत से और पैट का 49.2 प्रतिशत से बढ़ने की संभावना है।

नागर विमानन: 2010-11 के दौरान, बिक्रियां 24.2 प्रतिशत बढ़ गईं। वर्ष 2011-12 में, समग्र रूप से अधिक यात्री परिमाणों के चलते नागर विमानन क्षेत्र की बिक्रियों का 10.5 प्रतिशत की दर से बढ़ने की संभावना है। तथापि, एक कमजोर रुपए के कारण प्रचालनात्मक व्ययों में वृद्धि होने की संभावना है। ईंधन खर्चों का 40.2 प्रतिशत से बढ़ना संभावित है। मजदूरी और अन्य प्रचालनात्मक खर्चों का 14-15 प्रतिशत तक बढ़ जाना संभावित है। वर्ष 2012-13 के दौरान बिक्रियों के 13.5 प्रतिशत से बढ़ने की आशा है।

खुदरा क्षेत्र: खुदरा व्यापार करने वाली कंपनियों ने बिक्रियों में 2010-11 में 12 प्रतिशत और 2011-12 में अब तक 9.4 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की है। 10.3 प्रतिशत उत्पाद शुल्क लगाने के साथ-साथ धागों और वस्त्रों की कीमतों में वृद्धि के कारण, ब्रैंडिड परिधानों की कीमतों में तीव्र वृद्धि हुई जो कम उपभोक्ता खर्चों में परिणामी हुई और इससे कपड़ा खुदरा व्यापार करने वाली कंपनियों की बिक्रियां काफी आहत हुई हैं। तथापि, 2012-13 के दौरान, बिक्रियों के 15.7 प्रतिशत से बढ़ने की संभावना है। 2011-12 के दौरान पैट में 53.1 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि होने की संभावना है और 2012-13 के दौरान इसके 34.4 प्रतिशत से बढ़ने की आशा है।

स्वास्थ्य सेवाएं: 2010-11 के दौरान, इस उद्योग की बिक्री 25.4 प्रतिशत की दर से बढ़ी थी। 2011-12 और 2012-13 के दौरान, अस्पतालों में भर्ती होने के स्तरों के अधिक होने और प्रत्येक दाखिल हुए मरीज़ के राजस्वों के कारण इनका क्रमश: एक लाभप्रद 18.6 प्रतिशत और 20.5 प्रतिशत से बढ़ जाने की संभावना है। तथापि, प्रमुख लागत संघटकों जैसे वेतन और मज़दूरी तथा अन्य प्रचालनात्मक व्ययों के क्रमश: 21.7 प्रतिशत और 21.1 प्रतिशत की तीव्रगामी दर से बढ़ने की संभावना है। इस क्षेत्र के पैट का 2011-12 में 24 प्रतिशत से गिरना तथा 2012-13 में 17 प्रतिशत से बढ़ना संभावित है।

होटल: होटल उद्योग में वर्ष 2010-11 के दौरान 14.3 प्रतिशत की बिक्री वृद्धि देखी गई और 2011-12 और 2012-13 में इसके द्वारा इस स्तर को बनाए रखने की संभावना है। पैट के 2011-12 में 36.2 प्रतिशत की दर पर और 2012-13 तक 26.4 प्रतिशत की दर पर बढ़ने की संभावना है। उत्तरी अमरीका और पश्चिमी यूरोप के अलावा अन्य क्षेत्रों से पर्यटकों के चलते 2012-13 और 2013-14 में पर्यटक अंतर्वाहों के बढ़ने की संभावना है। इन क्षेत्रों में एशियाई क्षेत्र जैसे दक्षिण एशिया, पूर्व एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया शामिल हैं। पर्यटन मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, हाल ही के वर्षों में इन देशों से आने वाले पर्यटकों का हिस्सा बढ़ रहा है, और इसके आगे आने वाले वर्षों में भी बढ़ते रहने की संभावना है।

टेलीकॉम: 2010-11 के दौरान 10.5 प्रतिशत तक बढ़ने के पश्चात्, टेलीकॉम उद्योग में बिक्री वृद्धि का 2011-12 में 8.7 प्रतिशत होने और 2012-13 में 10.6 प्रतिशत होने की संभावना है। 2011-12 के दौरान, टेलीकॉम उद्योग के ब्याज व्ययों में तीव्र वृद्धि और 3जी लाइसेंसों का अधिग्रहण करने और 3जी सेवाएं शुरू करने हेतु, लिए गए भारी उधारों के कारण अधिक मूल्यह्रास प्रभारों के कारण पैट के 84.7 प्रतिशत से गिरने की संभावना है।

सॉफ्टवेयर: 2010-11 के दौरान, बिक्री 17.1 प्रतिशत से और पैट 15 प्रतिशत से बढ़ गया। मार्च, 2012 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सॉफ्टवेयर उद्योग की बिक्री के 20.5 प्रतिशत से और 2012-13 के दौरान 18.5 प्रतिशत से और अधिक बढ़ने की संभावना है। बिक्री में वृद्धि के पीछे मुख्य कारण आईटी कंपनियों की संख्या का बढ़ना है। पैट के 2011-12 में 13.1 प्रतिशत और 2012-13 में 14.2 प्रतिशत तक बढ़ने का अनुमान है। बिक्री में लाभप्रद वृद्धि होने के बावजूद, अधिक मजदूरी बिल और वर्धित कर प्रावधानन के कारण इस उद्योग के मार्जिनों के दबाव में बने रहने की संभावना है।

निर्माण और संबद्ध कार्य:-2010-11 में 14.2 प्रतिशत की वृद्धि के पश्चात् इस उद्योग की बिक्रियों के 2011-12 के दौरान 16.1 प्रतिशत की दर से बढ़ने की संभावना है। तथापि, इस उद्योग के लाभ निष्पादन के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। 2010-11 के दौरान पैट 9.1 प्रतिशत से गिर गया और 2011-12 के दौरान इसके 10.4 प्रतिशत से गिरने की संभावना है। बढ़ती हुई विनिर्माण लागतों और अधिक ब्याज व्ययों के चलते ऐसा होगा। इस्पात और सीमेंट जैसी प्रमुख निविष्टियों की कीमतों के वर्ष के दौरान क्रमश: 7.2 प्रतिशत से और 5.5 प्रतिशत से बढ़ने की संभावना है। ब्याज दरों में वृद्धि और अधिक उधारों के कारण 2011-12 में ब्याज खर्चों के भी तीव्र 46.7 प्रतिशत से बढ़ने की संभावना है। 2012-13 के दौरान, बिक्री और पैट के क्रमश: 18.6 प्रतिशत से और 17.4 प्रतिशत से बढ़ने की संभावना है।

स्रोत: सीएमआईई उद्योग विश्लेषण के आधार पर एक्ज़िम बैंक द्वारा संकलित

के जरिए और कई मिलियन नौकरियों की व्यवस्था करता है। चूंकि भारत के राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी में पर्यटन एक एकल शीर्ष के अंतर्गत नहीं आता, इसके योगदान का अनुमान लगाना पड़ता है। पर्यटक उपग्रह लेखा आंकड़ों के अनुसार, 2007-08 में स.घ.उ. और रोजगार में इसका योगदान क्रमश: 5.92 प्रतिशत और 9.24 प्रतिशत था।

10.24 भारत में, हाल ही के वर्षों में पर्यटन क्षेत्र महत्वपूर्ण वृद्धि का साक्षी रहा है। 2006 से 2011 की अवधि के दौरान पर्यटन से (रुपए के संदर्भ में) विदेशी पर्यटक आगमन (एफटीए) और विदेशी मुद्रा अर्जन (एफईई) का सीएजीआर क्रमश: 7.2 प्रतिशत और 14.7 प्रतिशत था। 2010 के दौरान भारत में विदेशी पर्यटक आगमन 2009 के दौरान 5.17 मिलियन की तुलना में 11.8 प्रतिशत

सारणी 10.6 : भारत के सेवा क्षेत्र का निष्पादन: कुछ संसूचक

क्षेत्र	संसूचक	इकाई	अवधि			
			2008-09	2009-10	2010-11	2011-12
विमान	विमान यात्री (घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय)	मिलियन	49.5 (क)	54.5 (क)	64.5 (क)	59.3 (क)
दूरसंचार	दूरसंचार संपर्क (वायरलाइन और वायरलेस)	लाख	4297.25	6212.8	8463.2	9265.3 (ख)
पर्यटन	विदेशी पर्यटक आगमन	मिलियन	5.28 (ङ)	5.17 (ङ)	5.78 (ङ)	6.29 (क)
	पर्यटकों के आगमन से विदेशी विनिमय का अर्जन	मिलियन	11832	11394()	14193 (क)	16564(ङ)
पोत परिवहन	भारतीय पोत परिवहन का सकल टनभार	मिलियन	9.28	9.69	10.45	11.06(घ)
	जलयानों की संख्या	संख्या	925	1003	1071	1122(घ)
पत्तन रेलवे	पत्तन यातायात	मिलियन टन	532.53	562.74	569.91	488.8 (ग)
रेलवे	रेलवे द्वारा भाड़ा यातायात	मिलियन टन	833.31	887.99	832.75	704.81 (ख)
	रेलवे के निवल टन किलोमीटर	मिलियन	538226	584760	444515	466968 (ख)
भंडारण	भंडारण क्षमता	मी. टन	105.25	105.98	102.47	99.81(ख)
	भांडागारों की संख्या	संख्या	499	487	479	469 (ख)

स्रोत: नागर विमानन महानिदेशालय; भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण, पर्यटन मंत्रालय; पोत परिवहन मंत्रालय; रेल मंत्रालय; केन्द्रीय भंडागार निगम (भारतीय एग्ज़िम बैंक द्वारा संकलित)

टिप्पणियां: जी टी का अर्थ सकल टनभार है।

(क) कैलेण्डर वर्ष, उदाहरण के लिए 2007 के 2007-08। (ख) अप्रैल-दिसम्बर। (ग) अप्रैल-जनवरी।

(घ) 1 जनवरी, 2012 की स्थिति के अनुसार (ङ) पर्यटन मंत्रालय द्वारा अग्रिम अनुमान

की वृद्धि दर्ज करते हुए 5.78 मिलियन थे, जो 2010 में विश्व के लिए 6.5 प्रतिशत की वृद्धि से कहीं अधिक है। रुपए के अर्थ में 2010 में पर्यटन से प्राप्त विदेशी मुद्रा अर्जन 2009 के दौरान 54,960 करोड़ की तुलना में 18.1 प्रतिशत की वृद्धि दर के साथ 64,889 करोड़ रु॰ थे। यूरोप और अमरीका की अर्थव्यवस्थाओं में मंदन और मंदनकारी रूझानों के बावजूद, 2011 के दौरान विदेशी पर्यटक आगमन 2010 की तुलना में 8.9 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 6.29 मिलियन थे और 2011 में विदेशी मुद्रा अर्जन 19.6 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 77,591 करोड़ रु॰ थे। निर्गामी पर्यटन के मामले में 2010 के दौरान भारत से भारतीय राष्ट्रिकों के प्रस्थानों की संख्या 12.99 मिलियन थी, जिसमें वर्ष के दौरान 17.4 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। घरेलू पर्यटन भी इस क्षेत्र के एक महत्वपूर्ण योगदाता के रूप में उभरा है, जिससे इस क्षेत्र का काफी समुत्थान हुआ है। 2010 के दौरान घरेलू पर्यटक यात्राओं का 10.7 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 740.2 मिलियन होना अनुमानित है।

10.25 होटल और रेस्तरां पर्यटन क्षेत्र का एक आवश्यक संघटक हैं। 31 दिसंबर 2011 की स्थिति के अनुसार, देश में 1,29,606 कमरों की क्षमता वाले 2,895 वर्गीकृत होटल थे। देश में पर्यटन को बढ़ाने में अच्छी गुणवत्ता और किफायती होटल कमरों की उपलब्धता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समग्र अर्थव्यवस्था में होटल और रेस्तरां क्षेत्र का हिस्सा 2004-05 में 1.46 प्रतिशत से बढ़कर 2008-09 में 1.53 प्रतिशत हो गया और फिर 2010-11 में गिरकर 1.46 प्रतिशत रह गया। तथापि, यदि केवल सेवा क्षेत्र में इस क्षेत्र के योगदान पर विचार किया जाए तो इसका हिस्सा 2004-05 में 2.75 प्रतिशत से गिरकर 2010-11 में 2.64 प्रतिशत रह गया क्योंकि अन्य सेवा क्षेत्र इस सेवा क्षेत्र से अधिक तेजी से बढ़े हैं। 2004-05 से 2007-10 के दौरान इसका सीएजीआर 8.44 प्रतिशत था और 2010-11 में संवृद्धि दर 7.7 प्रतिशत थी। स्वास्थ्य पर्यटन, जो इस क्षेत्र में एक नया प्रवेशक है, एक आला क्षेत्र है, जिसमें भारत की अच्छी संभाव्यता है। (बाक्स 10.3)

10.26 जैसाकि स्वाभाविक है, इस क्षेत्र की संवृद्धि से वायु यात्रा और होटल निवास को सेवा कर के अंतर्गत शामिल किया गया है। आर्थिक समीक्षा 2010-11 ने हालिया वर्षों में लिए गए मुख्य नीतिगत निर्णयों का विवरण दिया है। फिर भी, भारत को एक मुख्य पर्यटक गंतव्य बनाने के लिए अभी काफी कुछ किया जाना शेष है। इसे क्षेत्र के कुछ समस्यात्मक क्षेत्रों में निम्नलिखित शामिल हैं। राज्य 5 प्रतिशत से 12.5 प्रतिशत की दर तक एशो-आराम कर लगाते हैं। कुछ मामलों में, एशो-आराम कर मुद्रित कमरा दरों पर प्रयोज्य हैं, जबकि मेहमानों को दी जाने वाली वास्तविक होटल दरें काफी कम हैं। होटलों पर एशो-आराम कर का यौक्तिकीकरण करने की दृष्टि से, भारत सरकार ने राज्यों से करों की युक्तिसंगतता और एकरूपता की ओर कार्य करने का अनुरोध किया है ताकि इनके गंतव्यों को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके। उनसे यह अनुरोध भी किया गया है कि वे 2500 रुपए से कम के कमरा प्रशुल्क को एशो आराम कर से छूट प्रदान करें तथा वास्तविक प्रशुल्क पर 4 प्रतिशत की एक समान दर पर एशो आराम कर प्रभारित करें। होटलों का निर्माण मुख्यतया एक निजी-क्षेत्र कार्य है जिसमें काफी पूंजी लगती है और जिसकी तैयारी अवधि लंबी है। उच्च लागत और भूमि की सीमित उपलब्धता के अलावा होटल उद्योग के समक्ष आने वाली एक मुख्य बाधा है होटल परियोजनाओं

बॉक्स 10.3 : विश्व में स्वास्थता पर्यटन: भारत को लाभ

अनेक अध्ययनों ने चिकित्सा पर्यटन के लिए वैश्विक बाजार का 100 बिलियन अमरीकी डालर से 150 बिलियन अमरीकी डालर तक होना आंकलित किया है। एशियाई चिकित्सा पर्यटन बाजार और बढ़ते हुए गुणवत्ता मानकों को राष्ट्रीय सरकारों द्वारा की गई पहलें सहारा देती हैं। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार थाईलैंड, भारत सिंगापुर, मलेशिया, हंगरी, पोलैंड और माल्टा अपने सापेक्षतया लाभप्रद स्थानों का संवर्धन चिकित्सा पर्यटन गंतव्यों के रूप में कर रहे है। मलेशिया ने मलेशिया में स्वास्थ्य-देखभाल और यात्रा उद्योग का विकास और संवर्धन करने के लिए मलेशिया हेल्थकेयर ट्रेवल काउंसिल की स्थापना की है। फिलीपिंस ने फिलीपिंस चिकित्सा पर्यटन कार्यक्रम शुरू किया है और बीमा नीति योजना में चिकित्सा पर्यटन को शामिल किया है। थाइलैंड कई दशकों से अपनी संवधर्नात्मक कार्यनीति में स्पा और वैकल्पिक रोगोपचारों जैसे कारकों को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ हाल ही में अपने आधुनिकतम अस्पतालों और कुशल व्यावसायिकों को भी बढ़ावा दे रहा है।

अनेक अभिलक्षणों जैसे किफायती स्वास्थ्य-देखभाल समाधान, कुशल स्वास्थ्य-देखभाल व्यावसायिकों की उपलब्धता, उन्नत स्वास्थ्य देखभाल खंडों में उपचार की ख्याति, भारत की पारम्परिक सुस्वस्थता प्रणलियों की बढ़ती लोकप्रियता और आईटी में समर्थता ने भारत को एक आदर्श स्वास्थ्य-देखभाल गंतव्य के रूप में स्थापित किया है। भारत, आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों में अपनी क्षमताओं को सुदृढ़ करते हुए पारंपरिक स्वास्थ्य-देखभाल प्रणालियों जैसे आयुर्वेद, सिद्ध, योग, प्राकृतिक चिकित्सा और ईश्वर-विश्वास से चिकित्सा आध्यताम्वाद में अपनी अंतर्निहित शक्तियों को भी बढ़ावा दे रहा है। एकाग्रता और मस्तिष्क नियंत्रण की अपनी तकनीकों पर प्रवीणता और अपने प्राकृतिक संसाधनों और सांस्कृतिक विविधता के कारण भारत अपने प्रतियोगी देशों से आगे है।

स्रोत: एक्जिम बैंक ऑफ इंडिया द्वारा संकलित

के लिए केन्द्रीय और राज्य सरकारी एजेंसियों से अपेक्षित बहुल समाशोधन/अनुमोदन अधिप्राप्त करना। प्रत्येक राज्य में भिन्न भिन्न होते हुए कुछ मामलों में होटल परियोजनाओं के लिए कम से कम 65 समाशोधन/अनुमोदन अपेक्षित है। केंद्रीय स्तर पर एक आतिथेय (हास्पिटेलिटी) विकास और संवर्धन बोर्ड का गठन किया गया है। इस बोर्ड का मुख्य कार्य केन्द्रीय और राज्यीय सरकारी स्तरों, दोनों पर होटल परियोजनाओं के लिए समाशोधनों/अनुमोदनों को मॉनीटर करना और उन्हें सुकर बनाना होगा। यह बोर्ड विभिन्न समशोधनों के लिए आवेदन प्राप्त करने, समयबद्ध तरीके से होटल परियोजनाओं को अनुमोदित करने समाशोधित करने और देश में होटल/अतिथेय अवसंरचना के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए होटल परियोजना नीतियों की समीक्षा करने के लिए एकल स्थल कार्यालय होगा। राज्य सरकारों से भी अपने मुख्य सचिवों की अध्यक्षता में ऐसे ही बोर्डों का गठन करने के लिए अनुरोध किया गया है। अब तक मिजोरम, मणिपुर और महाराष्ट्र ने ऐसे बोर्ड बनाए हैं। इस क्षेत्र में किए जाने वाले अन्य उपायों में स्मारकों में प्रवेश हेतु शुल्क को परिमेय बनाने और इस शुल्क का उपयोग उनके अनुरक्षण के लिए करने; पर्यटकों की सुरक्षा पर ध्यान देने और सुस्वस्थता पर्यटन का संवर्धन करने को शामिल किया जा सकता है।

परिवहन संबंधी कुछ सेवाएं

पोत परिवहन

10.27 किसी भी देश के वस्तु और सेवा व्यापार, दोनों का पोत परिवहन एक महत्वपूर्ण संकेतक है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका देश के व्यापार में लगभग 95 प्रतिशत की प्रमात्रा के साथ और समुद्र द्वारा वाहित किए जाने वाले मूल्य के अर्थ में 68 प्रतिशत का हिस्सा है। पहली जनवरी, 2012 की स्थिति के अनुसार भारत के पास 11.06 मिलियन के सकल टन भार (जीटी) के साथ 1,122 जहाजों का बेड़ा था, जिसमें सरकारी-क्षेत्रक भारतीय पोत परिवहन निगम (शिपिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया) का 36.17 प्रतिशत का सबसे बड़ा हिस्सा है। इसमें से 10.01 मिलियन सकल टनभार वाले 372 जहाज भारत के विदेशी व्यापार में लगे हुए हैं और शेष तटीय व्यापार में। 2010-11 में भारतीय जहाजों के सकल विदेशी मुद्रा अर्जन/बचतें 10,666.45 करोड़ रु॰ थीं। 'फ्लैग ऑफ कन्वीनीयेन्स' देशों को छोड़कर, हांगकांग सर्वाधिक कुल टनभार (डीडब्ल्यूटी) वाला देश है। यद्यपि विकासशील देशों में भारत के पास सबसे बड़ा व्यापारिक जलयान बेड़ा है, 1 जनवरी 2011 की स्थिति के अनुसार केवल 1.09 प्रतिशत के हिस्से के साथ कुलभार टनभार के संदर्भ में, विश्व में भारत का स्थान अठ्ठारहवां है। इसकी तुलना में, 3.78 प्रतिशत के हिस्से के साथ चीन का नौवां स्थान है। (सारणी 10.7)। भारतीय जलयान अंतर्राष्ट्रीय औसत से सापेक्षतया पुराने भी हैं। दिसंबर, 2011 की स्थिति के अनुसार, बेड़ों का

सारणी 10.7 : 01 जनवरी 2011 की स्थिति के अनुसार फ्लैग्स ऑफ रजिस्ट्रेशन द्वारा व्यापारी बेड़ों का हिस्सा

रैंक	फ्लैग ऑफ रजिस्ट्रेशन	डीडब्ल्यूटी ('000 में)	हिस्सा (%)
1.	पनामा	306032	21.93
2.	लाइबेरिया	166246	11.91
3.	मार्शल आइलैंड्स	98757	7.08
4.	हांग कांग	91733	6.57
5.	ग्रीस	71420	5.12
6.	बहामास	67465	4.83
7.	सिंगापुर	67287	4.82
8.	माल्टा	61294	4.39
9.	चीन	52741	3.78
10.	साइप्रस	32321	2.32
11.	जापान	22201	1.59
12.	दक्षिण कोरिया	20155	1.44
13.	इटली	19440	1.39
14.	आइल ऑफ मैन	19422	1.39
15.	नार्वे	18065	1.29
16.	जर्मनी	17566	1.26
17.	यूके	16999	1.22
18.	भारत	15278	1.09

स्रोत : यूएनसीटीएडी, समुद्रवर्ती परिवहन, 2011 की समीक्षा पर आधारित।

44 प्रतिशत हिस्सा 20 साल से पुराना था और 12 प्रतिशत जलयान 16-20 वर्ष पुराने थे।

10.28 यूएनसीटीएडी द्वारा प्रारंभिक अनुमानों के अनुसार वर्ष 2010 में, 8.94 मिलियन बीस फुटे माल डिब्बा वाहक जहाज प्रचालन के संदर्भ में 0.32 प्रतिशत के विश्व शेयर के साथ भारत का स्थान विकासशील देशों में आठवां था। इसके आगे, यूएनसीटीएडी, भारत को वर्ष 2010 में परिदायों के आधार पर जहाजनिर्माण (136,000 डीडब्ल्यूटी के 37 जलयान) के लिए शीर्ष 20 अर्थव्यवस्थाओं में से एक (17वां स्थान) के रूप में वर्गीकृत करता है, जबकि विश्व में इसका हिस्सा केवल 0.11 प्रतिशत है। भारत जहाजों को तोड़ने का कार्य करने वाले मुख्य राष्ट्रों में से भी एक है। 2010 में, 32.43 प्रतिशत के वैश्विक हिस्से के साथ जहाज असम्बद्ध करने वाले राष्ट्रों की सूची में अग्रणी रहा था, जिसने 9.28 मिलियन डीडब्ल्यूटी वाले 451 जहाजों को असंबद्ध किया। भारत समुद्री यात्रियों की आपूर्ति करने वाले मुख्य देशों में से भी एक है। 2010 में तीसरे स्थान पर और 7.5 प्रतिशत हिस्से के साथ इसने वैश्विक पोत परिवहन उद्योग को 46,497 अधिकारियों की पूर्ति की। तथापि, यूएनसीटीएडी लाइनर पोत परिवहन सूचकांक के अनुसार, 2004 में 21वें स्थान से नीचे गिरकर भारत वर्ष 2011 में 22वें स्थान पर रहा।

10.29 वैश्विक पोत परिवहन उद्योग आर्थिक मंदी के कारण वर्ष 2011 में भारी उथल पुथल झेल रहा था। भारतीय पोत परिवहन कंपनियों को पोत परिवहन के सभी खंड़ों में अत्यन्त कम चार्टर किराए और मालढुलाई दरों के कारण 2011-12 में सीमित नकद अंतर्वाहों की समस्या का सामना करना पड़ा। ये कठिन आर्थिक परिस्थितियां 2008 से चल रही थीं। जिनसे 2011-12 में थोड़ी थोड़ी राहत मिली। अपने कारोबारों को बेहतर रूप से चला पाने वाली अधिकांश भारतीय पोत परिवहन कंपनियां वे हैं जो पोत परिवहन खंड़ों अथवा कारोबारों में विविध रूप से मौजूद है। जहां बल्कर्स और टैंकर्स खंड में गिरावट देखी गई, वहीं जैक-अप्स और उप-समुद्री जलयानों के साथ अपतटीय खंड ने कंपनियों के लिए नकद दृश्यता सुनिश्चित की।

10.30 इसके अतिरिक्त, जलदस्युता की घटना सरकार के लिए अत्यधिक चिंता का विषय रही है। सरकार ने जलदस्युता-प्रभावी क्षेत्रों में व्यापारिक जलयानों को सहायता देने के लिए नौसेना जलयानों का परिनियोजन किया है। 17 फरवरी 2012 की स्थिति के अनुसार 27 भारतीय समुद्री यात्री अभी भी सोमालियाई समुद्री डाकुओं की हिरासत में है। सरकार संयुक्त राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय समुद्रवर्ती संघटन (आईएमओ) की बैठकों में जलदस्युता में और अधिक ठोस अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई करने की आवश्यकता का मुद्दा उठा रही है।

10.31 पोत परिवहन उद्योग को एक आंशिक समान प्रतिभागिता अवसर प्रदान करने और इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए, सरकार ने 2011 में कुछ नीतियां लागू कीं जैसे ड्रिलिंग रिंग्स को 3.34 प्रतिशत का न्यूनतम मूल्यह्रास देना (यह मानकर कि उनका जीवन 30 वर्ष है); 29 जुलाई, 2011 को अध्याय 8901 के अंतर्गत आने वाले जहाज़ों को सीमाशुल्क और उत्पाद शुल्क से छूट प्रदान करना बशर्ते कि उन्हें पोतपरिवहन महानिदेशक द्वारा व्यापारी पोत परिवहन अधिनियम 1958 की धारा 406 के तहत एक सामान्य लाइसेंस दिया गया हो और बजट 2011-12 में जहाज मालिकों द्वारा अपेक्षित कल-पुर्जों और पूंजीगत वस्तुओं पर आयात शुल्क से छूट देना।

10.32 जबकि भारत का विदेशी समुद्री संवाहित व्यापार, 1999-2000 में 224.62 मिलियन टन से बढ़कर 2010-11 में 570 मिलियन टन होकर, पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण रूप से बढ़ रहा है, भारत के विदेशी व्यापार के संवाहन में भारतीय जहाजों के हिस्से में तीव्र गिरावट रही है। 1980 के दशक के अंतिम वर्षों में 40 प्रतिशत से 2009-10 में भारत के तेल आयातों में 18 प्रतिशत हिस्से के साथ यह हिस्सा गिरकर 9 प्रतिशत हो गया है। भारत के व्यापार में भारतीय जहाजों की सापेक्षतया कम प्रतिभागिता को देखते हुए और भारतीय बेड़ों की औसत उम्र के 1999 में 15 वर्ष से बढ़कर 2012 में 18.37 वर्ष होने के साथ इस तथ्य को देखते हुए कि भारतीय जहाज पुराने हो रहे हैं, समुद्री बेड़े को बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता है ताकि यह कम से कम भारत की व्यापार प्रमात्राओं की पूर्ति कर सके। भारतीय पोत परिवहन का अधिक आस्ति आकार न केवल अर्थव्यवस्था को अधिक संवृद्धि की ओर ले जाएगा बल्कि अधिक रोजगार और उच्च विदेशी मुद्रा अर्जनों/बचतों में भी परिणत होगा। समुद्र संवाहित व्यापार के मूल्य के 7.5 प्रतिशत के आधार पर 2010-11 में भारत का माल ढुलाई बिल अनुमानत: 57 बिलियन अमरीकी डालर पर बैठा और अनुमान दर्शाते हैं कि टन भार में 5 प्रतिशत की वृद्धि 6.3 बिलियन अमरीकी डालर बचत/अर्जन में परिणत हो सकती है। इस तथ्य को देखते हुए कि जहाजों की कीमतें जो 2007-08 के मध्य में शीर्ष पर पहुंच गई थी, दिसंबर, 2009 की स्थिति के अनुसार सबसे नीचे पहुंचने के कगार पर हैं, पर्याप्त और सस्ते वित्त के साथ भारतीय बेड़ों का सुदृढ़ीकरण करना आवश्यक है। पोत परिवहन क्षेत्र में बहुविध उद्ग्रहणों का यौक्तिकीकरण भी सहायता कर सकता है।

पत्तन सेवाएं

10.33 पत्तन राष्ट्रों के बीच व्यापार की अत्यावश्यक कड़ी है। पत्तनों का निरंतर आधुनिकीकरण और पत्तन अवसंरचना का उन्नयन, पत्तनों की उत्पादकता और कार्यक्षमता को बढ़ाने के लिए जरूरी है। 1 जनवरी, 2012 की स्थिति के अनुसार भारतीय पत्तनों की कुल क्षमता लगभग 1,160 मिलियन टन पर पहुंच गई है। 2009-10 और 2010-11 के दौरान प्रमुख पत्तनों पर यातायात ने पिछले वर्ष की तुलना में क्रमश: 5.67 प्रतिशत और 1.59 प्रतिशत

सारणी 10.8: भारत में प्रमुख पत्तनों के लिए कुछ निष्पादन संबंधी संकेतक

वर्ष	औसत परिवर्तन काल (दिवस में)	लंगर डालने से पूर्व लगने वाला औसत समय (घंटों में)	प्रति शिप बर्थ दिवस औसत आउटपुट (मी. टन में)
2004-05	3.41	6.03	9371
2005-06	3.63	8.77	9543
2006-07	3.81	10.05	10010
2007-08	3.98	11.40	9440
2008-09	4.20	9.55	9669
2009-10	4.42	11.67	9215
2010-11	4.64	12.00	12429
2011-12 (अप्रैल-सित.)	4.66	12.12	10752

स्रोत: पोत परिवहन मंत्रालय, भारत सरकार का भारतीय पोत क्षेत्र संबंधी अपडेट (सितंबर, 2011)

की वृद्धि दर प्राप्त की। अमरीकी पत्तन प्राधिकरण संघ, 2009 में प्रहस्तित कुल नौभार प्रमात्रा के संबंध में सिंगापुर को 2008 में उसके प्रथम स्थान से द्वितीय स्थान पर पदावनत करके शाघांई को शीर्ष स्थान पर रखता है। कुल नौभार प्रमात्रा के संबंध में 2009 में मद्रास पत्तन और जवाहर लाल नेहरु पत्तन ट्रस्ट (जेएनपीटी) का स्थान क्रमश: 55वां और 56वां है, जो 2008 में उनके 70वें और 71वें स्थान से ऊपर है। नौवहन आर्थिक और संभार तंत्र संस्थान (जर्मनी) के दिसम्बर 2011 के नौवहन आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2010 में माल डिब्बा यातायात के संदर्भ में शीर्ष पर शंघाई के पश्चात सिंगापुर का स्थान है, जबकि जेएनपीटी का 25वां स्थान है। अप्रैल-दिसंबर 2011 के दौरान मुख्य भारतीय पत्तनों पर औसत टर्नअराउंड समय 2004-05 में 3.41 दिनों से बिगड़कर 4.66 दिन हो गया और यह कुछ पत्तनों जैसे पारादीप, कोलकाता, विजाग, तुतीकोरन, मुर्मुगोवा, मुंबई और कांधला पत्तनों पर सापेक्षतया अधिक था। सभी मुख्य पत्तनों के लिए औसत प्रहस्तन प्रति जहाज-लंगरगाह दिवस 10752 टन था। जेएनपीटी के लिए प्रति जहाज-लंगरगाह-दिवस 25,782 टन था और कोलकाता पत्तन के लिए यह 2765 टन था। भारत में औसत टर्नअराउंड समय पहले ही अंतर-राष्ट्रीय मानकों से सापेक्षतया अधिक होने के कारण, सिंगापुर पत्तन का टर्नअराउंड समय एक दिन से भी कम होने से औसत टर्नअराउंड समय और औसत पूर्व-लंगरगाह समय में और अधिक वृद्धि चिंता का कारण है, जबकि औसत प्रहस्तन में प्रति जहाज-लंगरगाह दिवस 2010-11 और अप्रैल-सितंबर 2011 में वृद्धि हुई है (सारणी 10.8)।

10.34 केन्द्रीय बजट 2011-12 ने अवसंरचना के लिए निधियों के आबंटन में वृद्धि की है और पत्तन क्षेत्र के लिए कर मुक्त बांडों की सीमा को बढ़ाकर 50 बिलियन रुपए किया है। सरकार मुख्य पत्तनों पर अतिरिक्त लंगरगाहों का विकास करके, यंत्रीकरण करके, अधिक बड़े जलयानों को खड़ा करने के लिए चैनलों और बंदरगाहों को गहरा बनाकर, बेहतर रेल और सड़क संबद्धता और राज्य सरकारों द्वारा संवर्धित गैर-मुख्य पत्तनों पर ऐसे ही विकास कार्य को सुकर बनाने के लिए चौतरफा प्रयास कर रही है। पत्तन क्षेत्र में सबसे बड़ी सरकारी-निजी भागीदारी (पीपीपी) परियोजना हाल ही में जेएनपीटी, मुंबई को दी गई है; सबसे बड़ी तलमार्जन परियोजना भी वहीं चलाई जा रही है। भारतीय पत्तनों, विशेषकर कोचीन में नए अंतरराष्ट्रीय माल डिब्बे पार-लदान टर्मिनल पर, भारतीय आयात-निर्यात माल डिब्बों का और अधिक पार-लादान होने के अनुमान है। ऐसे प्रत्येक समुद्रपारीय राज्य में एक अतिरिक्त मुख्य पत्तन की स्थापना करने का प्रस्ताव विचाराधीन है, जो इस विकास कार्य में अपनी सहायता प्रदान करने का इच्छुक है और एक तकनीकी समिति आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक और केरल के राज्यों से प्राप्त नए मुख्य पत्तनों के लिए प्रस्तावों का मूल्यांकन कर रही है। सरकार ने सफलतापूर्वक पत्तनों पर कारोबारी सौदों के लिए कागज़-रहित अभिशासन के भाग के रूप में पत्तन समुदाय प्रणाली क्रियान्वित की है।

10.35 तथापि, भारतीय व्यापार की इस प्रमुख धमनी को और अधिक सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता है। विशेषकर कच्चे तेल के प्रहस्तन के लिए बेहतर अवसंरचना की जरूरत है। अन्य मुद्दों में नौभार प्रहस्तन जहाजी कुली, विमान चालन सेवाओं, बंकर सेवाओं और माल-गोदाम सुविधाओं के संबंध में मौजूदा पत्तनों पर सुविधाओं का उन्नयन करना, भारतीय नौभार के समुद्र पारीय लदान को सुकर बनाने के लिए ड्राफ्टों को बढ़ाना जोकि अन्यथा देश से बाहर किया जाता है; और विभिन्न पत्तन प्रभारों का यौक्तिकीकरण करना, ताकि उनकी तुलना सर्वोत्तम अभ्यास स्तरों से की जा सके, शामिल हैं।

भंडारण सेवाएं

10.36 भंडारण सेवाएं अंतर्गामी और निर्गामी दोनों संभार तंत्रों का एक अभिन्न हिस्सा है, क्योंकि उत्पादित वस्तुओं का भंडारण मांग/आदेश आपूर्तियों के अनुसार नौवहन/संप्रेषण से पूर्व विभिन्न भौगोलिक अवस्थितियों में किया जाना होता है। भारत में भांडागारण का परम आवश्यक संघटक कृषि उत्पाद, खाद्यान्न, उर्वरक, खाद आदि के लिए कृषिय भंडार है। अन्य संघटकों में आयात/निर्यात व्यापार को सुकर बनाने के लिए औद्योगिक वस्तुओं, आयात नौभार और उत्पादशुल्क योग्य नौभार, अंतर्देशीय माल डिब्बा डिपो (आईसीडी)/माल डिब्बा मालढुलाई स्टेशनों (सीएफएस) के लिए भांडागारण शामिल है; और ठंडे और तापमान-नियंत्रित भंडारण के लिए विशेष गोदाम शामिल हैं। भांडागारण क्षेत्र कई अन्य अनुषंगी सेवाएं भी प्रदान करता है। केन्द्रीय भांडागार निगम (सीडब्ल्यूसी) 17 राज्य भांडागार निगमों (एसडब्ल्यूसी) के साथ कृषिय उत्पाद तथा औजारों और अन्य अधिसूचित वस्तुओं के लिए वैज्ञानिक भांडागार सुविधाएं प्रदान करता है। सामाजिक उद्देश्यों के साथ मिलकर इसकी वाणिज्यिक पहुंच से सीडब्ल्यूसी देश भर में एक विशाल भांडागार नेटवर्क चला रहा है। 31 दिसंबर, 2011 की स्थिति के अनुसार यह 99.81 लाख एमटी की कुल भांडागार क्षमता

और 89 प्रतिशत के औसत उपयोग के साथ 469 गोदामों का प्रचालन कर रहा था। 31 मार्च, 2011 की स्थिति के अनुसार क्षमता को कम करने के कारण गोदामों की संख्या 479 से कम है। सीडब्ल्यूसी ने 1970 के दशक के अंत में सरकारी-बांडेड गोदामों के प्रचालन में प्रवेश किया जब केन्द्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क बोर्ड ने इसकी पहचान शुल्कयोग्य वस्तुओं के लिए एक अभिरक्षक के रूप में की। सीडब्ल्यूसी ने सीएफएस/आईसीडी में अपने कारोबार को विविधीकृत किया और लोनी (उ०प्र०) से जेएनपीटी तक माल डिब्बा रेल यातायात भी शुरू किया। 2010-11 में इसने 65 करोड़ के कुल पूंजी परिव्यय के साथ 1.45 लाख एमटी की क्षमता बढ़ाई। राज्य स्तर पर, 1 दिसंबर, 2011 की स्थिति के अनुसार 17 एसडब्ल्यूसी 230.10 लाख एमटी की समग्र भंडार क्षमता वाले 1,624 गोदामों का नेटवर्क चला रहे थे।

10.37 सरकार द्वारा हाल ही में की गई प्रमुख नीतिगत पहलों में ये शामिल हैं; भारत सरकार की सात वर्षीय/10 वर्षीय गारंटी योजना के तहत गोदामों का निर्माण, भांडागारण अवसंरचना के निर्माण में 100 प्रतिशत तक के विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की अनुमति; राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की ग्रामीण भांडागारण योजना और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत भांडागारों का निर्माण; भांडागार प्राप्ति को पूर्णतया परक्राम्य बनाना और इसकी निजी उद्यमी गोदाम (पीईजी) योजना के अंतर्गत गोदामों का निर्माण। सीडब्ल्यूसी ने वर्ष 2010-11 के दौरान 1.45 लाख एमटी क्षमता वाले गोदामों का निर्माण किया है और 2011-12 के दौरान 2.09 लाख एमटी की अतिरिक्त क्षमता का निर्माण करने की योजना है। तथापि, उच्च गुणवत्ता भंडार क्षमता और प्रशिक्षित सैम्पलरों/ग्रेडरों की संख्या को और अधिक बढ़ाए जाने की आवश्यकता है।

संचार सेवाएं

दूरसंचार और संबंधित सेवाएं

10.38 पिछले कुछ वर्षों में भारतीय दूरसंचार क्षेत्र में प्रशंसनीय संवृद्धि देखने के साथ, इस क्षेत्र ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सफलता प्राप्त की है। भारतीय दूरसंचार संजाल का स्थान, विश्व में दूसरे सबसे बड़े संजाल के रूप में हैं, चीन का स्थान पहला है। दूरभाषों की कुल संख्या 31 मार्च 2007 को 206.83 मिलियन से बढ़कर 31 दिसंबर, 2011 की स्थिति के अनुसार, 926.53 मिलियन हो गई। वायरलैस कनेक्शनों में वृद्धि असाधारण रही है। देश के कुल दूरभाषों में अपने हिस्से को 96 प्रतिशत से अधिक करके इनकी संख्या दिसंबर 2011 के अंत में 893.84 मिलियन कनेक्शन पर पहुंच गई। टेली-घनत्व जो दूरभाष व्यापन का एक महत्वपूर्ण संकेतक है, मार्च 2007 में 18.31 प्रतिशत से बढ़कर दिसंबर 2011 में 76.86 प्रतिशत हो गया। जहां दिसंबर, 2011 की स्थिति के अनुसार शहरी टेली घनत्व 167.85 प्रतिशत के उच्च स्तर पर पहुंच गया, 37.48 प्रतिशत पर ग्रामीण टेली-घनत्व कम है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में और अधिक वृद्धि की संभाव्यता का संकेत देता है। उदार नीति अभिशासन ने इस क्षेत्र की संवृद्धि को सुकर बनाया और उपभोक्ताओं के लिए लागतों को कम किया, हालांकि दूरभाष क्षेत्र से संबंधित हालिया अदालती मामलों ने से कुछ निराशा व्याप्त हुई है। इस क्षेत्र से जुड़े मनोभावों को और सुधारों के जरिए सुधारा जा सकता है जिनमें बहुविध उद्ग्रहणों और करों का यौक्तिकीकरण करना और विभिन्न समाज कल्याण योजना के परिदाय में मोबाईल सेवाओं का प्रयोग करना शामिल है जिससे उसका ग्रामीण व्यापन बढ़ पाएगा। मसौदा राष्ट्रीय दूरभाष नीति 2011 के भी यही उद्देश्य है।

10.39 2004 में ब्रॉडबैंड नीति की घोषणा के बाद से, देश में ब्रॉडबैंड व्यापन को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक उपाय किए गए हैं। इसके परिणामस्वरूप, 31 दिसंबर 2011 की स्थिति के अनुसार 13.30 मिलियन ब्रॉडबैंड अभिदाता हैं और मार्चान्त 2011 में 19.69 मिलियन इंटरनेट अभिदाता हैं। तथापि, भारत में दूरभाषों की वृद्धि के कारण ब्रॉडबैंड पिछड़ गया है। ब्रॉडबैंड की व्यापकता को बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं, विशेषकर ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में। आने वाले दशक की शुरूआत संभवत: मोबाईल मूल्य वर्धित सेवाओं और सभी के लिए ब्रॉडबैंड के जरिए एक नए सूचना युग में होगी। बीडब्ल्यूए/3जी स्पैक्ट्रम और नेशनल आप्टिकल फाईबर नेटवर्क की सफलतापूर्वक समाप्त हुई नीलामी वायरलैस ब्रॉडबैंड व्यापन को बढ़ाएगी और देश भर की दूरस्थ अवस्थितियों को जोड़ने में मदद करेगी (अधिक ब्यौरों के लिए, अध्याय 11 देखें)।

डाक

10.40 देशभर में 154,866 डाक घरों के साथ भारतीय डाक विश्व का सबसे बड़ा डाक विभाग संजाल है। औसतन, प्रत्येक डाक घर लगभग 21.23 वर्ग कि०मी० के विस्तार से 7,814 व्यक्तियों को सेवाएं प्रदान करता है। करीब 139,040 डाक घर ग्रामीण क्षेत्रों में हैं जबकि 15,826 शहरी क्षेत्रों में। अपने स्वयं के नेटवर्क के अतिरिक्त , डाक विभाग 1155 फ्रैन्चाईजी आऊटलेटों के जरिए उन क्षेत्रों में भी सेवाएं प्रदान करता है, जहां डाक घर खोलना संभव नहीं है।

10.41 मौजूदा भारतीय डाक अवसंरचना का रूप बदलने के लिए सरकार ने वर्ष 2008 में मुख्य डाक प्रचालनों जैसे डाक बांटने, विप्रेषण और बैंकिंग सेवाओं का उन्नयन करके देश भर में 'प्रोजेक्ट एरो' शुरू किया था। भारतीय डाक खुदरा उत्पादों के लिए एक वन- स्टॉप शौप के रूप में उभर रही है और बैंकिंग, धन विप्रेषणों और अन्य वित्तीय उत्पादों के लिए एकल विंडो सुविधा प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त, भारतीय डाक को अपने 96,895 डाक घरों के जरिए महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम के लाभानुभोगियों को वेतन संवितरित करने की जिम्मेदारी भी दी गई है। ग्रामीण उपभोक्ता कीमत सूचकांक जैसे आंकड़ों को एकत्र करने के लिए भी अन्य सरकारी विभागों/एजेंसियों

द्वारा डाक नेटवर्क का प्रयोग किया जा रहा है। डाक क्षेत्र को बदलते हुए समय के साथ अपनी गति बनाए रखने की आवश्यकता है क्योंकि इसकी कई सेवाएं प्रौद्योगिकी में विकास होने के साथ और अन्य कंपनियों के इस क्षेत्र में आ जाने से अनावश्यक हो गई हैं। समय से आगे रहने के लिए त्वरित निर्णय और कार्रवाई करने से, जिसमें नए कार्यकलाप शुरू करना और कटौतियां करना शामिल है, इस क्षेत्र के कई संसाधन मुक्त हो सकते हैं, जिनका उपयोग कहीं और किया जा सकता है।

स्थावर संपदा सेवाएं

10.42 आवास एक आधारभूत आवश्यकता है और यह लोगों को आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करता है। आवास एक ऐसी 'आस्ति' भी है, जिसका आय सृजन के अन्य साधनों को समर्थित करने और अनुपूर्ति करने तथा गरीबी उपशमन पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है। यह एक आवश्यक रोजगार-गहन क्षेत्र है। पेशेवरों और व्यावसायिकों का एक बहुत बड़ा हिस्सा जैसे निर्माण संबंधी कामगार, बिल्डर, डेवलपर, इंजीनियर, मूल्यांकनकर्ता, संपत्ति परामर्शदाता, भीतरी सज्जाकार, परामर्शदाता और नलकार, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से आवास से अपनी आजीविका चलाते हैं। अनुमात दर्शाते हैं कि आवास और निर्माण में निवेश किए गए प्रत्येक रुपए में से 0.78 रु॰ स॰घ॰उ॰ में जुड़ता है। अर्थव्यवस्था के गुणक प्रभाव के संदर्भ में आवास का स्थान चौथा है और कुल संबद्धता प्रभाव के अर्थों में यह 14 प्रमुख उद्योगों में से तीसरा है। सीमेंट, इस्पात, पेंट और भवन हार्डवेयर जैसे 300 क्षेत्रों के साथ स्थावर संपदा उद्योग की महत्वपूर्ण सम्बद्धता है जो न केवल पूंजी निर्माण और रोजगार तथा आय अवसरों के सृजन में योगदान देते हैं बल्कि आर्थिक संवृद्धि को प्रेरणा और प्रोत्साहन भी देते हैं। अत:, आवास और स्थावर संपदा में निवेश को संपूर्ण अर्थव्यवस्था के विकास का पैमाना माना जा सकता है।

10.43 2010-11 में कारोबारी सेवाओं के साथ स्थावर संपदा (निवास स्थानों के स्वामित्व सहित) का स॰घ॰उ॰ हिस्सा 10.6 प्रतिशत था। 2008-9 में 10.4 प्रतिशत की दर से बढ़ने के बाद, इस क्षेत्र की वृद्धि दर 2009-10 में 7.8 प्रतिशत पर ह्रासित हो गई और 2010-11 में और गिरकर 6.9 प्रतिशत हो गई। वर्तमान में भारत के स॰घ॰उ॰ में लगभग 5 प्रतिशत हिस्सा आवास क्षेत्र का है। आवास निवेश के लिए सांस्थानिक ऋण के अगले तीन-पांच वर्षों में लगभग 18 से 20 प्रतिशत प्रति वर्ष की सीएजीआर से बढ़ने के साथ, स॰घ॰उ॰ में आवास क्षेत्र के योगदान के बढ़कर 6 प्रतिशत तक होने की संभावना है। यद्यपि भारत आवास और कार्य स्थल जरूरतों के संदर्भ में शीर्षस्थ देशों में से है, विश्व बैंक की 'डूईंग बिज़नेस 2012' की रिपोर्ट के अनुसार निर्माण अनुमति प्रक्रियाओं में इसका स्थान 181वां है। इसमें 34 प्रक्रियाविधियां शामिल हैं और औसतन 227 दिनों का समय लगता है। इस क्षेत्र से जुड़े मुद्दों में से कुछ मुद्दे हैं: ब्याज दरों का कठोर होना और संभावित चूकें; भूमि अधिग्रहण से संबंधित चुनौतियां, उच्च स्टाम्प शुल्क, पंजीकरण और नामान्तरण से संबंधित औपचारिकताएं और लागतें जिनमें से कुछ अनावश्यक और फिजूल हैं: शहरी भूमि उच्चतम सीमा विनियम अधिनियम (उल्क्रा) और नगरों में मौजूदा निम्न तल क्षेत्र अनुपात; और उप-कानूनों तथा प्रक्रियाओं के मानकीकरण साथ एकल समाशोधन पद्धति की अनुपस्थिति। हाल ही में कुछ शहरी स्थानीय निकायों/विकास प्राधिकरण जैसे दिल्ली और इंदौर के नगर निगमों ने भवन निर्माण योजनाओं को ऑनलाईन मंजूरी और समापन प्रमाणपत्र जारी करना शुरू किया है, जिससे अनुमोदन समय कम लग सकता है। अन्य विकास प्राधिकरणों द्वारा ऐसे ही उपाय उठाए जाने चाहिए।

कुछ कारोबार सेवाएं

आईटी और आईटीईएस

10.44 सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और सूचना प्रौद्योगिक समर्थित सेवा (आईटीईएस) क्षेत्र भारत को एक तरूण और समुत्थानशील वैश्विक ज्ञान शक्ति की छवि दे रहे हैं। आईटी-आईटीईएस उद्योग के चार मुख्य उप-संघटक हैं: आईटी सेवाएं, बिज़नेस प्रौसेज़ आऊटसोर्सिंग (बीपीओ), इंजीनियरी सेवाएं और अनुसंधान तथा विकास (आरएंडडी) और सॉफ्टवेयर उत्पाद। नास्कॉम के अनुमानों के अनुसार, भारत के आईटी और बीपीओ क्षेत्र (हार्डवेयर को छोड़कर) के राजस्व, वर्ष 2011-12 में 87.6 बिलियन अमरीकी डालर थे, जिससे करीब 2.8 मिलियन व्यक्तियों के लिए प्रत्यक्ष रोजगार तथा लगभग 8.9 मिलियन व्यक्तियों के लिए अप्रत्यक्ष रोजगार का सृजन हुआ। राष्ट्रीय स॰घ॰उ॰ के अनुपात के रूप में आईटी और आईटीईएस क्षेत्र के राजस्व 1997-8 में 1.2 प्रतिशत से बढ़कर 2011-12 में अनुमानित 7.5 प्रतिशत पर पहुंच गया।

10.45 सॉफ्टवेयर निर्यातों का 2010-11 में 59 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 2011-12 में 69 बिलियन अमरीकी डालर पर होना अनुमानित है। यद्यपि, निर्यातों ने आईटी-आईटीईएस उद्योग पर अपना 'प्रभुत्व बनाए रखा, और इनका कुल उद्योग राजस्व में 78.4 प्रतिशत का हिस्सा था, घरेलू क्षेत्र की सीएजीआर भी ग्यारहवीं पंच वर्षीय योजना अवधि के दौरान निर्यातों के 14.2 प्रतिशत की तुलना में 12.8 प्रतिशत पर उच्च रही है। घरेलू क्षेत्र की वृद्धि दर, निर्यात क्षेत्र के 18.8 प्रतिशत की तुलना में 2010-11 में 20.6 प्रतिशत थी; 2011-12 में घरेलू क्षेत्र के लिए यह दर 9.7 प्रतिशत और निर्यात क्षेत्र के लिए 16.4 प्रतिशत थी। नास्कॉम अनुमानों के अनुसार, 2012-13 में निर्यात राजस्वों का 11-14 प्रतिशत बढ़ना और घरेलू राजस्वों का 13-16 प्रतिशत बढ़ना अनुमानित है। ये अनुमान आईटी और आईटीईएस क्षेत्र के अनछुए घरेलू क्षेत्र में और खोज करने की संभाव्यता के संकेतक है (सारणी 10.9)।

10.46 संयुक्त राज्य अमरीका से निरंतर मांग की यह विशेषता 2011-12 में रही है कि भारतीय आईटी एवं आई टीईएस सेवाओं के कुल निर्यातों में इस का हिस्सा 61.5 प्रतिशत से बढ़कर 62

सारणी 10.9 : आई.टी.-आई.टी.ई.एस. का समग्र वृद्धि निष्पादन

वर्ष	मूल्य (अमरीकी बिलियन डालर)					वृद्धि दर (%)	सी.ए.जी.आर. (%) ग्याहरवीं पंचवर्षीय योजना
	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11(अनु.)	2011-12(अ.)	2011-12	
कुल आई.टी.-बीपीओ							
सेवा राजस्व	52.1	59.9	64.0	76.3	87.6	14.8	13.9
निर्यात	40.4	47.1	49.7	59.0	68.7	16.4	14.2
घरेलू	11.7	12.8	14.3	17.3	19.0	9.7	12.8

स्रोतः एन.ए.एस.एस.सी.ओ.एम.

टिप्पणीः अ. = अनंतिम; अनु. = अनुमानित

प्रतिशत हो गया। प्रशांत एशिया और शेष विश्व के उभरते बाजारों का योगदान भी समग्र संवृद्धिकारी रहा। यद्यपि उद्योग के ऊर्ध्व बाजार का सम्मिश्र अनेक प्रौढ़ और उभरते क्षेत्रों में पर्याप्त संतुलित है, तथापि बैंकिंग, वित्तीय सेवाएं, और बीमा जैसे न केवल परम्परागत खंडों में, वरन खुदरा वस्तुओं, स्वास्थ्य परिचर्या, मीडिया और उपयोगिताओं के नए ऊर्ध्व उभरते बाजारों में भी व्यापक आधार पर मांग थी। नैस्कॉम के अनंतिम अनुमानों के अनुसार निर्यात क्षेत्र में 2011-12 में उपक्षेत्रवार आईटी सेवाएं, ग्यारहवीं योजनावधि के लिए 58 प्रतिशत के साथ प्रधान घटक थीं जिसमें 15.7 प्रतिशत का सीएजीआर था; इसके बाद 23.1 प्रतिशत पर बीपीओ का स्थान 12.5 प्रतिशत सीएजीआर के साथ था; और 18.9 प्रतिशत हिस्सा और 11.18 प्रतिशत सीएजीआर के साथ साफ्टवेयर उत्पाद/इंजीनियरी इसके बाद थे। भारतीय आईटी सेवा प्रस्ताव का विकास अनुप्रयोग विकास और रख-रखाव से ऐसे पूर्ण सेवा साझीदारों के रूप में हो गया है जो परीक्षण और अवसंरचना सेवाएं, परामर्श, और प्रणाली समेकन मुहैया करा रहे हैं। इस वर्ष में बीपीओ-क्षेत्र विकास का अगला चरण भी दिखाई पड़ा जिसकी विशेषता सेवाओं के अपेक्षाकृत अधिक विस्तार एवं गहनता, मूल्य श्रृंखला में सर्वत्र प्रक्रिया की पुनःसंरचना, मंचों के जरिए विश्लेषण विज्ञान और ज्ञान आधारित सेवाओं का वर्धित प्रदाय, घरेलू बाजार पर प्रबल जोर और लघु तथा मध्यम आकार के व्यवसाय केंद्रित प्रदाय मॉडल थी। इंजीनियरी डिजाइन और उत्पाद विकास खंडों में इलेक्ट्रॉनिक का वर्धमान उपयोग, ईंधन कार्यक्षता मानदंडों का अंगीकरण, स्थानीय बाजारों की समाभिरूपता, और स्थानीयकृत उत्पादों का उपयोग रहा। ग्राहकों एवं अल्प-मध्यम-उच्च जटिलता की परियोजनाओं में विभिन्न क्रियाकलापों का सफलतापूर्वक निष्पादन कर रहे सेवा प्रदायकों के बीच बढ़े विश्वास से भारत से बहिस्रोतण की जा रही परियोजनाओं के आकार में वर्धनात्मक रूप से बढ़ गया। घरेलू क्षेत्र में प्रधान घटक 64.2 प्रतिशत हिस्से के साथ आईटी सेवाएं है। इनके बाद 19.6 प्रतिशत हिस्से सहित साफ्टवेयर उत्पाद/इंजीनियरी और 16.2 प्रतिशत हिस्से सहित बीपीओ हैं। इन क्षेत्रों का सीएजीआर क्रमशः 11.5 प्रतिशत, 13.6 प्रतिशत और 18.1 प्रतिशत है। मजबूत आर्थिक संवृद्धि, प्रौद्योगिकी अवसंरचना में द्रुत उन्नति, वर्धित प्रतिस्पर्द्धात्मक भारतीय संगठन, सरकार के केंद्रित ध्यान की वृद्धि और व्यवसाय के ऐसे नमूनों जिनसे नए ग्राहक खंडों में आईटी के उपलब्ध होने में मदद मिलती हो, का उद्भव भारत में वर्धित प्रौद्योगिकीय अंगीकरण के मूल प्रेरक हैं। आईटी तथा आईटीईएस क्षेत्रक कुशल रोजगार का सृजन भी है जिसके 2010-11 में 2.5 मिलियन प्रत्यक्ष रोजगार की तुलना में 2011-12 में 2.8 मिलियन तक पहुंचने की प्रत्याशा है।

10.47 भारत की आईटी और आईटीईएस क्षेत्र द्वारा सामना की गई-चंद चुनौतियों में प्रोत्साहन प्राप्त अल्प लागतों के साथ दूसरे देशों से प्रतिस्पर्धा बढ़ना, मज़दूरी बढ़ने से हुई मुद्रास्फीति के कारण भारत में लागतों का बढ़ना, प्रयोज्य मेधावी और कुशल कर्मिकों पर लागतों का बढ़ना, सात टियर I अवस्थितियों से सृजित कुल राजस्व के 90 प्रतिशत से अधिक की अवसंरचना की बाध्यता, मौद्रिक उतार-चढावों और सुरक्षा, वास्तविक और डाट संबंधी दोनों जैसे जोखिम, और मुख्य बाजार में बढ़ते संरक्षणवादी विचार शामिल हैं। सरकार ने आईटी और आईटीईएस उद्योग का विकास बढ़ाने संबंधी विभिन्न पहलें की हैं और यह ऐसे क्षेत्रक सुधारों जिनसे आईटी प्रतिग्रहण, राष्ट्रीय ई-अभिशासन योजना और बड़े पैमाने पर आईटी अवसंरचना सृजक और कारपोरेट भागीदारीवर्धक भारतीय अद्वितीय पहचान विकास अधिकरण कार्यक्रम जिनसे प्रोत्साहन मिलता हो, के जरिए वर्धित आईटी अंगीकरण हेतु प्रधान उत्प्रेरक रही है। राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी नीतिगत प्रारूप 2011 में अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के सूचना-संचार प्रौद्योगिकी के फैलाव और विश्व को सूचना प्रौद्योगिकी समाधान प्रदान करने पर ध्यान दिया गया है। इस नीति में शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास, वित्तीय समावेशन, रोजगार सृजन और अभिशासन में विकासपूरक चुनौतियों से निपटने हेतु प्रौद्योगिकी समर्थ कार्यशैलियां अपनाने पर जोर है ताकि अर्थव्यवथा में विविध स्तरों पर दक्षता बढ़ सके। इसमें सूचना संचार प्रौद्योगिकी को संपूर्ण भारत की व्याप्ति में ले आना है। इसके साथ ही 2020 तक आईटी और आईटीईएस सेवाओं के वैश्विक केन्द्र और गंतव्य स्थल के रूप में उभरने के लिए देश को समर्थ बनाने हेतु इसकी अनंत मानव संसाधन

क्षमता का उपयोग भी करना है। भारत सरकार ने राष्ट्रीय ई-अभिशासन योजना का अनुमोदन मई 2006 में किया ताकि सभी सरकारी सेवाओं को साधारण सेवा प्रदाय विक्रय केन्द्रों के जरिए आम आदमी के लिए उसके क्षेत्र में सस्ती लागतों पर मुहैया कराया जा सके। राष्ट्रीय ई-अभिशासन योजना में मिशन मोड परियोजनाएं एवं मूल ई-अवसंरचना शामिल है। मूल ई-अभिशासन के निर्धारण और अधिकांश मिशन मोड परियोजनाओं में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। 97,000 से अधिक साधारण सेवा केन्द्र वेब समर्थित सेवा प्राप्ति स्थलों के रूप में देश भर में स्थापित किए गए हैं ताकि नागरिकों को सार्वजनिक सेवाएं हर समय हर कहीं उपलब्ध हो सके। राष्ट्रीय ई-अभिशासन योजना की पहलकदमियों में आय कर, कारपोरेट मामले मंत्रालय 21, पारपत्रों और केन्द्रीय उत्पाद से जुड़ी आनलाइन सेवाएं शामिल हैं। सरकार ने शिक्षा, स्वास्थ्य, सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा डाक सेवाओं से संबंधित नई ई-अभिशासनात्मक परियोजनाएं भी प्रारंभ की है। इससे आम आदमी को गुणतापरक शिक्षा, लागत साधक एवं गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्य परिचर्या तथा डाक सेवाओं की प्राप्ति सस्ती दरों पर सुनिश्चित होगी।नागरिकों को इलेक्ट्रानिक विधि से उपलब्ध सार्वजनिक सेवाओं की संख्या का विस्तार 20 दिसंबर 2011 को केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित इलेक्ट्रानिक सेवाएं प्रदायक विधेयक के जरिए किया जाएगा। चल प्रौद्योगिकी और उससे जुड़ाव की पहुंच में द्रुत वृद्धि प्रोत्साहित करने और आम आदमी को सभी सेवाओं की प्राप्ति सुनिश्चित करने हेतु सभी ई-अभिशासनात्मक परियोजनाओं के तहत सार्वजनिक सेवाएं चल दूरभाषों और आकाश टेबलेटों जैसी सचल युक्तियों के जरिए प्रदान की जाएंगी। इसके अलावा मूल बैंककारी सेवाएं अर्थात् नगदी आहरण, नगदी जमा, बचत की पूछताछ और एक खाते से दूसरे खाते में धन का अंतरण आम सेवा केन्द्रों के जरिए प्रत्येक पंचायत में तथा दिसंबर 2013 तक धनांतरण सुविधा प्रत्येक गांव में काम करने लगेगी। ऐसा सूचना संचार प्रौद्योगिकी एवं चल प्रौद्योगिकी को बढ़ाकर किया जाएगा। इससे वित्तीय समावेशन को आईटी की सहायता से हकीकत में बदलने में मदद मिलेगी।

लेखाकरण और लेखापरीक्षा सेवाएं

10.48 विश्व व्यापार संगठन की सूचनानुसार 2009 में भारत द्वारा निर्यातित 28.5 बिलियन अमरीकी डालर की अन्य व्यावसायिक सेवाओं में विधिक, लेखाकरण, प्रबंधन और जन संपर्क सेवाओं का हिस्सा 16.2 प्रतिशत था और 21.03 बिलियन अमरीकी डालर के आयातों में उनका हिस्सा 26.2 प्रतिशत था। भारतीय लेखांकन फर्में और अधिक एकीकृत होती जा रही हैं तथा लेखांकन, लेखापरीक्षा और कर-सेवाओं जैसे मूल कार्य के अतिरिक्त प्रबंधन संबंधी परामर्शदायी सेवाएं, निगमित वित्त और परामर्शी सेवाएं जैसी संबद्ध सेवाएं मुहैया करा रही हैं। लेखांकन व्यवसाय की संरचना भारत में कुछ साझेदारी अथवा स्वामित्व वाली संस्थाओं के साथ साझेदारी के रूप में है और इसमें मुख्यत: छोटे और मध्यम उद्यम (एसएमई) हैं। मौजूदा विनियमों में सनदी लेखाविधि का व्यवसाय कर रही फर्मों के लिए भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान में पंजीकृत कराए जाने की जरुरत है।

10.49 पांच अथवा पांच से अधिक साझेदारी वाली चार्टरित एकाउंटेंसी फर्मों की संख्या 48,000 फर्मों में से 2043 है। शेष फर्में मालिकाना फर्मों अथवा अपने-अपने नाम से कार्य कर रही हैं। भारत में चार्टरित एकाउंटेंसी व्यवसाय ने अपनी अर्हता, प्रशिक्षण मानकों का वैश्विक स्तर पर बैंचमार्क निर्धारित किया है तथा यू. के., आस्ट्रेलिया, कनाडा और आयरलैंड में लेखाकन निकायों के साथ योग्यता, मान्यता संबंधी व्यवस्थाओं पर समझौता किया है। लेखाकरण सेवाओं में भारतीय निर्यात क्षमता का उपयोग अर्हताओं की ऐसी आपसी मान्यता से किया जा सकता है। घरेलू लेखाकरण फर्मों के लघु आकार की कमजोरी मिटाने के लिए की गई सहबद्धता से भारत के लेखाकरण क्षेत्र को कई-कई गुणा बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

अनुसंधान और विकास सेवाएं

10.50 बैताल आरएंडडी पत्रिका के अनुसार, 2012 के लिए भारत द्वारा शोध और विकास पर सकल घरेलू व्यय के क्रय शक्ति समता के आधार पर 41 बिलियन अमरीकी डालर होने का अनुमान था जो सकल घरेलू उत्पाद के हिसाब में 0.8 प्रतिशत है। यह निरपेक्ष आधार पर और अन्य देशों की तुलना में सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के रूप में अल्प है। इसका आंशिक कारण यह है कि आरएंडडी के आधार का आकार एवं आमेलन सामर्थ्य अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं है (सारणी 10.10)।

10.51 2010-11 के अनुमानों के अनुसार भेषज, विद्युत एवं विद्युतेतर मशीनरी, परिवहन उपकरण, इलेक्ट्रानिक्स और प्लास्टिक क्षेत्रकों में आर एंड डी संबंधी विशालतम व्यय हुए। औषध क्षेत्रक

सारणी 10.10 : वैश्विक अनुसंधान और विकास खर्चों का पूर्वानुमान

क्षेत्र/देश/	2012	
	पीपीपी अर्थों में जीईआरडी	स.घ.उ. के प्रतिशत के रूप में अनु. और वि.
यूएसए	436.0	2.3
एशिया	514.4	1.9
जापान	157.6	3.5
चीन	198.9	1.6
भारत	41.3	0.8
यूरोप	338.1	2.0
विश्व	**1402.6**	**2.0**

स्रोत: बैटेल आर एंड डी मैगजीन, दिसंबर 2011

के लिए आरएंडी की गहनता अन्य क्षेत्रों की गहनता से कहीं अधिक थी। यद्यपि विगत दशक के दौरान भारत में दर्ज पेटेन्टों की वृद्धि दरों में पर्याप्त इजाफा रहा है, तथापि भारत में स्वदेशी शोध के जरिए कार्य के लिए दर्ज पेटेन्टों का हिस्सा कुल पेटेन्ट के 20 प्रतिशत से कम है। शोध और विकास कार्मिक के पूर्णकालिक समकक्ष व्यक्तियों की संख्या बढ़ाने के लिए नीतिगत समायोजना शोध एवं विकास गहनता में वृद्धि के लिए मुख्य आवश्यकता है। शोध एवं विकास की पूर्णकालिक समकक्ष जनशक्ति चीन के लिए 14.23 लाख और दक्षिण कोरिया के लिए 2.29 लाख होने का अनुमान है जबकि भारत के लिए यह 1.54 लाख है। बारहवीं योजना के अंत तक कम-से-कम 2.50 लाख तक पूर्णकालिक व्यक्तियों की संख्या बढ़ाने से देश आर एंड डी के वैश्विक परिदृश्य में शीर्ष 6 स्थानों तक पहुंचने में समर्थ हो सकता है।

10.52 यद्यपि विकसित राष्ट्र नवीनीकरण प्रक्रिया में अग्रणी रहते हैं, तथापि आर एंड डी कार्यों में विकसित से विकासशील राष्ट्रों में बर्धित अंतरण हो रहा है। विकासशील एशियायी राष्ट्र, खासकर चीन और भारत, वैश्विक शोध एवं विकास में वृद्धि को संचालित कर रहे हैं। अल्प लागत, नए बाजारों तक पहुंच, ज्ञानोन्मुख जनशक्ति की उपलब्धता, अनुकूल विनियामक पर्यावरण और राजकोषीय सुविधाओं जैसे कारक आर एंड डी निवेशों को इन देशों में ले जाने में प्रधान भूमिका निभाते हैं। विकसित राष्ट्रों की बहुराष्ट्रीय कंपनियां इलेक्ट्रानिक्स और दूरसंचारों, साफ्टवेयर विकास, हार्डवेयर और उत्पाद अभिकल्प तथा, औषध विकास जैसे क्षेत्रों में सहयोगी परियोजनाओं के जरिए आर एंड डी के अपने कार्यों को इन देशों में फैलाने की आशा करती है। परामर्शदात्री फर्म डिलाईट द्वारा जुलाई 2011 में तैयार आर एंड डी विषयक श्वेत पत्र में अनुमान लगाया गया है कि 300 से अधिक बहु राष्ट्रीय कंपनियों ने आर एंड डी इकाइयां भारत में स्थापित की हैं। सेवा प्रदायकों ने लगभग 3.5 बिलियन अमरीकी डालर मूल्य के शोध और विकास का बहिस्रोतण किया है तथा बहुराष्ट्रीय कंपनी की सहायक कंपनियों ने लगभग 6.5 बिलियन अमरीकी डालर मूल्य के शोध एवं विकास का निर्यात 2009 में भारत में किया है। विश्व आर्थिक मंच की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता रिपोर्ट 2011-12 के अनुसार ब्रिक्स राष्ट्रों के बीच भारत का स्थान नवोन्मेष क्षमता के मामले में चीन और ब्राजील से नीचे है परंतु वैज्ञानिक एवं शोध संस्थाओं की गुणवता एवं वैज्ञानिकों तथा अभियंताओं की उपलब्धता के मामले में चीन से ऊपर है। परंतु भारत शोध विकास पर कंपनी द्वारा किए खर्च, आर एंड डी विषयक विश्वविद्यालय उद्योग सहयोग और प्रति मिलियन आबादी पर प्रदत उपयोगिता पेटेन्टों के मामलों में चीन से पीछे है (तालिका 10.11)। इसका कारण है कि आर एंड डी में निजी क्षेत्र का हिस्सा सकल घरेलू उत्पाद के 0.25 प्रतिशत पर रहने से अभी अल्प है जबकि अनेक विकसित और उभरती अर्थव्यवस्थाओं में यह 1.2 से 2 प्रतिशत तक है। जीईआरडी के उल्लेखनीय रूप से बढ़ने के लिए आर एंड डी में निजी क्षेत्रक निवेश को बारहवीं योजनावधि से आगे तक सार्थक रूप से बढ़ाया जाना होगा। बजट 2011-12 में राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं/विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थानों को वैज्ञानिक शोध के लिए किए गए संदायों पर भारित कटौती को 175 प्रतिशत से 200 प्रतिशत तक बढ़ाया गया।

विधिक सेवाएं

10.53 भारत में अनुमानत: 600,000 विधिक व्यावसायी है तथा संख्या के अर्थ में यह संयुक्त राज्य अमरीका से अगले स्थान पर है। खेल प्रदाय व्यक्ति वकील तथा लघु और परिवाराधारित फर्में है। भारत में, विधि की प्रेरिक्त को 1961 के अधिवक्ता अधिनियम द्वारा शामिल किया जाता है। इस अधिनियम के तहत, विदेशी विधिक फर्मों को भारत में प्रेक्टिस करने की अनुमति नहीं है। अनेक विदेशी विधिक फर्मों ने सम्पर्क कार्यालय स्थापित किए हैं।

सारणी 10.11 : भारत और अन्य चयनित देशों में अनु. और विकास संकेतक

देश	नवोत्पाद हेतु क्षमता		वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थानों की गुणवत्ता		अनु. और विकास पर कंपनी के खर्चे		अनु. और विकास पर विश्वविद्यालय उद्योग सहयोग		वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की उपलब्धता		प्रदत्त उपयोगिता पेटेंट/मिलियन जनसंख्या	
	स्कोर	रैंक	स्कोर	रैंक	स्कोर	रैंक	स्कोर	रैंक	स्कोर	रैंक	स्कोर	रैंक
भारत	3.6	35	4.5	34	3.7	33	3.8	50	4.9	21	0.9	59
चीन	4.2	23	4.3	38	4.2	23	4.5	29	4.6	33	2.0	46
द. अफ्रीका	3.5	46	4.7	30	3.6	36	4.6	26	3.4	111	2.3	42
ब्राजील	3.8	31	4.1	42	3.8	30	4.2	38	3.8	91	0.9	60
रूस	3.5	38	3.8	60	3.1	61	3.5	75	4.0	72	1.9	47
द. कोरिया	4.3	20	4.8	25	4.8	11	4.7	25	4.9	23	240.6	5
यूएसए	5.2	7	5.8	7	5.3	6	5.7	3	5.5	4	339.4	3
यूके	4.8	13	6.1	3	4.7	12	5.8	2	5.1	14	69.5	20

स्रोत: वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक रिपोर्ट 2011-12, विश्व आर्थिक फोरम

वर्तमान में कानून के तहत अनुमत जबकि कुछेक विदेशी फर्मों ने भारतीय फर्मों के साथ रेफरल संबंध स्थापित किए हैं।

10.54 वैश्विक प्रतिस्पर्धा रिपोर्ट 2011-12 के अनुसार न्यायिक स्वतंत्रता के अर्थ में भारत का 4.3 के स्कोर के साथ 51वां स्थान है। विवाद निपटाने में विधिक ढांचे की दक्षता के बारे में भारत का स्थान 3.7 स्कोर के साथ 64वां है। चुनौतीपूर्ण विनियमों में विधिक ढांचे की दक्षता के मामले में भारत का स्थान 3.9 स्कोर के साथ 51वां है। इससे स्पष्ट है कि भारत को विधिक और न्यायिक सुधारों के जरिए अपना दर्जा बढ़ाने एवं मामलों के निपटान में गति बढ़ाने की जरूरत है।

10.55 वैश्विक मंदी से लागतें घटाने का दबाव कंपनियों पर पड़ रहा है और वे अपने गौण कार्यों को अल्प लागत वाले प्रतिष्ठानों से बहिस्रोतण आधार पर कराने की विविध विधियों का परीक्षण कर रही है। भारत जैसे अल्प लागत वाले देशों में विधिक कार्यों को बाह्य साधन से कराना एक ऐसा उपाय है जिसका अनुसरण विशेषकर संयुक्त राज्य अमरीका, यूनाइटेड किंगडम जैसे विकसित देशों में कानूनी फर्मों द्वारा किया जा रहा है। भारत, संयुक्त राज्य अमरीका, यूनाइटेड किंगडम में विधिक व्यवस्थाओं को जड़ ब्रितानी साधारण कानून में है। इससे भारतीय विधिवक्तागण संविदाओं, पेटेन्ट पंजीकरणों की विधीक्षा या दस्तावेजों की समीक्षा करने जैसे मानक कानूनी कार्य करने में और अधिक अतिरिक्त प्रशिक्षण प्राप्त किए बिना सक्षम बन जाते हैं। इसके अलावा भारत में कानूनी कार्य के सामुद्रिक आगमन से लगभग 80 प्रतिशत लागत की बचत होती है जिसका उपयोग संयुक्त राज्य अमरीका जैसे विकसित देशों में किया जा सकता है। सरकार द्वारा हाल में किए गए चंद उपाय निम्नलिखित हैं। विधिक शिक्षा राज्य अधिनियमों के तहत स्थापित 913 कालेजों (अधिकांश संख्या निजी रूप से प्रशासित है) और 14 राष्ट्रीय विधि विद्यालयों/विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदान की जा रही है। विधि शिक्षा के क्षेत्र में प्रधान चुनौतियां चर्या कौशल, विधि के रूप से प्रशिक्षित व्यक्तियों से अपेक्षित रवैया और आचारों तथा योग्य विधि शिक्षकों का अभाव है। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने विधि शिक्षा के नियमन के लिए पृथक निकाय की स्थापना करने और उन्नत विधि अध्ययन और शोध केंद्रो की संस्थापना करने की सिफारिश की। स्वतंत्र निकाय, राष्ट्रीय विधि शिक्षा और शोध परिषद् संस्थापित करने संबंधी प्रस्ताव प्रक्रियाधीन है। विधि शिक्षा जारी रखने के ज़रिए विधिक और शैक्षिक उत्कृष्टता के विविध पहलुओं पर प्रगत शोध के संवर्धन हेतु चार क्षेत्रीय उन्नत विधि अध्ययन और अनुसंधान केंद्रों की स्थापना का प्रस्ताव भी प्रक्रियाधीन है। राष्ट्रीय वाद नीति की शुरूआत 23 जून 2010 को विचाराधीनता की औसत अवधि 15 से घटाकर 3 वर्ष करने और न्यायालयों में विलंबों की अवधि घटाने के राष्ट्रीय विधि मिशन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए की गई थी। राज्य वाद नीति निर्मित करने के लिए समुचित कदम उठाने हेतु भी राज्य सरकारों से आग्रह किया गया है। राष्ट्रीय विधि सेवा प्राधिकरण को विधि सेवा प्राधिकार अधिनियम 1987 के तहत विधि सहायता कार्यक्रमों के क्रियान्वयन का अनुवीक्षण और मूल्यांकन करने तथा अधिनियम के तहत उक्त विधि सेवाएं उपलब्ध कराने हेतु नीतियों और सिद्धांतों का निर्धारण करने के लिए गठित किया गया है। प्रत्येक राज्य में राज्य विधि सेवा प्राधिकरण और प्रत्येक उच्च न्यायालय में एक उच्च न्यायालय विधि सेवा समिति का गठन किया गया है। राष्ट्रीय विधि सेवा प्राधिकरण (नालसा) की नीतियों और निर्देशों को लागू करने, लोगों को मुफ्त विधिक सेवाएं मुहैया कराने, और राज्यों में लोक अदालतें आयोजित करने के उद्देश्य से जिला विधि सेवा प्राधिकरण और तालुक विधि सेवा समितियां 596 जिलों और 2,037 तालुकों में गठित की गई हैं। 6,95,000 से अधिक व्यक्तियों ने देश में विधि सहायता सेवाओं का लाभ 1 अप्रैल 2011 से 30 सितंबर 2011 तक उठाया है। लाभार्थियों में 25,000 से अधिक अनुसूचित जातियों के लोग, लगभग 11,500 अनुसूचित जनजातियों, के लोग 24,600 महिलाएं और 1,628 बच्चे थे। 53,508 लोक अदालतें इस अवधि में आयोजित की गई। इन लोक अदालतों ने 13,75,000 से अधिक मामलों का निपटारा किया । लगभग 39,900 मोटर वाहन दावा मामलों में 420.12 करोड़ रु॰ का हरजाना प्रदान किया गया। माध्यस्थम् और सुलह अधिनियम 1996 में वाणिज्यिक विवादों तथा संशोधनों संबंधी प्रस्तावों को शीघ्रता से लागू करने की ज़रूरत है ताकि भारत अंतरराष्ट्रीय माध्यस्थम् के लिए अनुकूल केंद्र बन सके। बजट 2011-12 में विधिक सेवाओं का दायरा व्यावसायिक संस्थानों द्वारा व्यक्तियों को प्रदत्त सेवाएं और व्यक्तियों द्वारा व्यावसायिक संस्थानों को प्रदत्त प्रतिनिधिक एवं माध्यस्थम् सेवाएं शामिल करने के लिए बढ़ाया गया है। तथापि व्यक्तियों द्वारा अन्य व्यक्तियों को प्रदत्त सेवाओं पर कोई कर नहीं लगाया जाता है।

परामर्श कार्य सेवाएं

10.56 भारत में परामर्श कार्य सेवाएं मुख्य व्यवसाय क्षेत्रों में से एक क्षेत्र के रूप में उभर रही हैं। भारतीय परामर्शी उद्योग में संरक्षक आधार पर राजस्व की मात्रा का अनुमान 2010-11 में लगभग 8.24 बिलियन अमरीकी डालर लगाया गया है। फिलवक्त इसका अंशदान सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 0.47 प्रतिशत है। विगत चंद वर्षों में इस उद्योग की वृद्धि दरें अत्यंत आशाजनक रही हैं और राजस्व के 20 प्रतिशत की विकास दर पर 2012 तक बढ़कर 9.89 बिलियन अमरीकी डालर हो जाने का अनुमान है। भारत में परामर्शी सेवा प्रदायकों को पांच श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है: व्यक्तिगत परामर्शदाता, परामर्शी फर्में आर एंड डी संगठन,

शैक्षिक संस्थान, व्यावसायिक निकाय परामर्शी सेवाएं, प्राप्त करने वाले ग्राहक क्षेत्रों में फिलहाल कृषि और ग्राम विकास, बैंकिंग तथा वित्तीय सेवाएं, निर्माण, शिक्षा, ऊर्जा, पर्यावरण, अभिशासन और लोक प्रशासन, स्वास्थ्य और जनांकिकी, अवसंरचना, सूचना प्रौद्योगिकी, विधि और नियमन, जीवनविज्ञान, विनिर्माण प्रबंधन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, दूर संचार, पर्यटन, परिवहन, शहरी विकास, और जल प्रबंध शामिल है।

10.57 परामर्शी सेवाएं बाजार को मोटे तौर पर इंजिनियरी और प्रबंधन परामर्शकार्य में वर्गीकृत किया जा सकता है। भारतीय प्रबंधन परामर्श बाजार अभी अपनी शैशवावस्था में है जिसमें विकास की अधिकता और भागीदारों की विशाल प्रविष्टि है। पारम्परिक आधार पर भारतीय प्रबंधन परामर्श बाजार की राजस्व मात्रा का अनुमान 2010-11 में लगभग 2.5 बिलियन से 3 बिलियन अमरीकी डालर तक लगाया गया था। यद्यपि यह वैश्विक प्रबंधन परामर्श कार्य बाजार की तुलना में राजस्व मात्रा की दृष्टि से अभी अपेक्षाकृत रूप में अल्प है तथापि भारतीय प्रबंधन परामर्शकार्य उद्योग में उच्च विकास देखा गया है जिसका आंशिक कारण इसका तलीय आधार से ऊपर उठना है। 2006-07 के उपलब्ध अनुमानों के अनुसार, इसमें लगभग 2,500 व्यक्ति और 22,300 फर्में शामिल थीं। भारतीय अभियांत्रिकी परामर्शकार्य बाजार में जो प्रबंधन परामर्शकार्य बाजार की तुलना में अधिक विकसित है, तेजी महसूस की जा रही है। इसमें बड़े पैमाने की अनेक विकास परियोजनाएं इसके विकास को प्रेरित कर रही हैं। परंपरागत आधार पर भारतीय अभियांत्रिकी परामर्श कार्य बाजार की राजस्व मात्रा का अनुमान 2010-11 में लगभग 5.5 बिलियन अमरीकी डालर से 6 बिलियन अमरीकी डालर होने का लगाया गया था। यद्यपि यह वैश्विक अभियांत्रिकी परामर्शकार्य बाजार की तुलना में अभी अपेक्षाकृत रूप से अल्प हैं, तथापि भारतीय अभियांत्रिकी परामर्शकार्य उद्योग में विगत कुछ वर्षों से अनवरत विकास देखा गया है। 2006-07 के उपलब्ध अनुमानों के अनुसार, इसमें लगभग 7,000 व्यक्ति और 25,600 फर्में शामिल थीं। विदेशी प्रत्यक्ष निवेश नीति के उदारीकरण, अनेक नए साझेदारों की उपस्थिति, अधिकांश मूल क्षेत्रों में उच्च विकास द्वारा, और भारत एक अल्प लागत स्रोतण गंतव्य होने के कारण विश्व के तीव्रतम गति से बढ़ते परामर्शकार्य बाजारों में से एक बाजार के रूप में इस का उभरना सरल हो गया है।

10.58 यद्यपि भारतीय परामर्शी उद्योग की वृद्धि विगत कुछ वर्षों में मज़बूत रही है, तथापि इसे विश्व के नक्शे पर ले आने और वैश्विक बाजार हिस्से में इसके हिस्से को बढ़ाने के लिए कतिपय मसलों पर ध्यान देने की जरूरत है। इनमें अनुभवी परामर्शी व्यावसायिकों की उपलब्धता, गुणता में सुधार, उचित प्रशिक्षण एवं विकास, परामर्शी समनुदेशनों पर भारतीय परामर्शदाताओं का विश्वस्तरीय अनुभव, और विदेश में परामर्शी अवसरों विषयक बाजार आसूचना शामिल है। सरकार ने कतिपय पहलें इन मसलों पर ध्यान देने के लिए की हैं। इनमें वाणिज्य विभाग की विपणन विकास सहायता और बाजार अभिगम पहल योजनाएं, वित्त मंत्रालय द्वारा परामर्शदाताओं के चयनार्थ दिशानिर्देश, और भारतीय निर्यात संगठनों के परिसंघ द्वारा ली गई कतिपय निर्यात संवर्धक पहलकदमियां शामिल हैं।

परामर्श सेवाएं

10.59 भारत में निर्माण उद्योग वृद्धि एवं विकास का महत्त्वपूर्ण संकेतक हैं। क्योंकि इससे विविध प्रकार के सभी संबंधित क्षेत्रों में निवेश के अवसर सृजित होते हैं और उत्पादन क्षमता बढ़ती है। 2011-12 के दौरान राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 8.2 प्रतिशत के हिस्से के साथ निर्माण उद्योग का अनुमानित अंशदान उपादान लागत पर 6,70,778 करोड़ रू॰ (वर्तमान कीमतों पर) है। जबकि 2010-11 में इसकी वृद्धि दर (सतत् कीमतों पर 8.0 प्रतिशत थी, बाहरी और घरेलू दोनों कारकों जैसे यूरोप में आसन्न मंदी, भारत में ब्याज दरों में वृद्धि, और कुछ स्थानों में भूमि अधिग्रहण से जुड़ी चुनौतियों के कारण 2011-12 में कम होकर यह 4.8 प्रतिशत हो गई। यह क्षेत्र श्रम गहन है और, अप्रत्यक्ष कार्यों सहित लगभग 33 मिलियन लोगों को रोज़गार देता है। अनुमान है कि इनमें से लगभग 70 प्रतिशत व्यक्ति अवसंरचना क्षेत्र में कार्यरत हैं जबकि शेष 30 प्रतिशत लोग स्थावर संपदा क्षेत्र में हैं। उद्योग अनुमानों के अनुसार इस उद्योग से 47 मिलियन अतिरिक्त रोजगार के सृजन की प्रत्याशा है जिससे इस क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों की कुल सं॰ 2022 तक 83 मिलियन व्यक्ति हो जाएगी। यह क्षेत्र समग्र अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता बढ़ाने में महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह बिजली परियोजनाओं, पत्तनों, रेल, सड़कों, पुलों जैसी अत्यावश्यक अवसंरचना की स्थापना में अपेक्षित आधे से अधिक निवेश की औसतन पूर्ति करता है।

10.60 चूंकि इस क्षेत्र को उद्योग का दर्जा 2000 में दिया गया था, अत: सरकार द्वारा और पहलकदमियां सरकारी निजी साझेदारी के आधार पर परियोजनाएं शुरू करने के लिए की गई है। इन पहलकदमियों की परिणति बनाओ चलाओ -अंतरित करो, बनाओ-चलाओ-स्वामित्व लो-अंतरित करो- और बनाओ-चलाओ पट्टे पर दो-अंतरित करो परियोजनाओं के और अधिक निजी स्वामित्व में हुई है। स्वत: अनुमोदित मार्ग में 100 प्रतिशत तक विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की अनुमति नगर क्षेत्रों, आवासन, निर्मित अवसंरचना, और विकास

परियोंजनाओं (जिनमें आवासन, वाणिज्यिक परिसर, शैक्षणिक संस्थान, और मनोरंजक सुविधाएं शामिल हैं) के निर्माण में दी गई है। निर्माण क्षेत्र का संचालन सरकार के एकल केंद्रीय विभाग द्वारा नहीं किया जाता। अवसंरचना निर्माण परियोजनाओं का पर्यवेक्षण उनके अपने स्वरूप की वजह से संबंधित केंद्रीय मंत्रालयों और राज्य स्तरों के मंत्रालयों द्वारा किया जाता है जबकि स्थावर संपदा क्षेत्र न केवल शहरी विकास मंत्रालय बल्कि राज्य

स्तर के शहरी विकास विभागों तथा और नीचे के नगर निगम प्राधिकरणों के अधीन आता है। योजना आयोग ने आदर्श अभियांत्रिकी-प्रापण निर्माण और सरकारी निजी भागीदारी के संविदापरक दस्तावेजों को तैयार करने में पहलेंकी हैं। सार्वजनिक प्रापणपत्र विधेयक प्रारूप 2011 टिप्पणियों और उन पर चर्चा के लिए सर्वजन को उपलब्ध हो सकता है। विधेयक का लक्ष्य बोली लगने की प्रक्रिया में एकरूपता एवं पारदर्शिता लाने का है। केंद्रीय बजट 2011-12 में इस क्षेत्र को और अधिक 23.3 प्रतिशत निधीयन का आवंटन किया गया। इस बीच अवसंरचना विकास में जुटे प्राधिकारियों को कर मुक्त बान्ड जारी करने की अनुमति दी गई है तथा अवसंरचना संबंधित बाण्डों के क्रय के इच्छुक विदेशी संस्थाओं और निवेशकों पर लगे प्रतिबंधों में ढील दी गई है। इस क्षेत्र में निधियों का प्रवाह बढ़ाने के लिए सरकार ने निगमित दीर्घकालिक इन्फ्रा बान्डों में निवेश के लिए एफआईआई सीमा भी बढ़ाई है, अवसंरचना ऋण निधियां सृजित की हैं, और भारत अवसंरचना वित्त कंपनी लिमिटेड द्वारा प्राप्ति वित्तपोषण और जमावर्धन योजना चलाई है। हाल में भारत सरकार ने अत्यावश्यक बिजली क्षेत्र में कुछ परियोजनाओं सहित आठ वृहत् अवसंरचना परियोजनाओं को तुरंत कार्रवाई से मंजूर करने का निर्णय लिया है ताकि वृद्धि में मंदी को रोका जा सके तथा व्यवसाय मनोभाव को उत्तोलित किया जा सके।

10.61 निर्माण क्षेत्र खंडों में है। जिससे मुट्ठी भर बड़ी कंपनियां सभी खंडों के अंतर्गत निर्माण क्रियाकलापों में संलग्न है; मध्यम आकार की कंपनियां बाजार में लाभदायक क्रियाकलापों में विशिष्टीकृत हैं; और लघु तथा मझोले संविदाकार है जो दरअसल उपसंविदा आधार पर कार्य करते हैं तथा क्षेत्र में कार्य का निष्पादन करते हैं। इस क्षेत्र का प्रधान संयोजन भवन निर्माण सामग्रियों के उद्योग से है, क्योंकि वे निर्माण लागतों (तकरीबन 40 प्रतिशत से 50 प्रतिशत) बड़े भाग के लिए उत्तरदायी है। बारहवीं योजना में अवसंरचनात्मक निवेश 1 ट्रिलियन अमरीकी डालर तक के बढ़ाने की कार्यनीतियों से निर्माण क्षेत्र का निकट भविष्य में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि करने वाली इंजिनों में से एक इंजिन बनना तय है। 20 लाख आबादी वाले शहरों में सार्वजनिक द्रुत परिवहन व्यवस्थाएं विकसित करने की सरकारी पहलकदमी से भी निर्माण क्रियाकलापों की मांग में इजाफा होगा। निर्माण क्षेत्र की क्षमता शहरी अवसंरचना खासकर सार्वजनिक द्रुत परिवहन व्यवस्थाओं और जल प्रबंधन में बहुत अधिक है। रेल सेवाओं में समर्पित माल गलियारों और श्रेणी II एव श्रेणी III शहरों में विमानपत्तनों के निर्माण, पत्तनों में अनिर्णीत परियोजनाओं को मंजूर करने और शहरी अवसंरचना में स्थावर संपदा के विकास जैसी नई परियोजनाओं को प्रारंभ करने से निर्माण क्षेत्र में विशाल अवसर भी उत्पन्न होंगे। इस क्षेत्र में कुछ अन्य मामलों जिन्हें सुलाझाए जाने की जरूरत है, के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं के लिए कारगर ढंग से बोली लगाने वाले संगठनों की स्थापना की आवश्यकता, ऋण से जुड़े मसले और ग्राहकों द्वारा प्रवर्तित अधिकांश विदेशी निविदाओं में पूर्वशर्त का जिसमें संविदाकर्ता कंपनी द्वारा पूर्ति किए जाने वाले उपकरणों को विकसित देशों के पूर्तिकारों को अनुमोदित सूची से अनिवार्यतया प्राप्त किया जाना होता है, मसला शामिल है।

कुछ सामाजिक सेवाएं

खेलकूद

10.62 मनोरंजन, शारीरिक स्वास्थ्य, और मानव व्यक्तित्व विकास का साधन होने के अलावा, खेलकूदों ने राष्ट्रीय पहचान, सामुदायिक मेलजोल और वैश्विक जुड़ाव में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाई है। खूलकूदों के अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक होने के कारण आधुनिक अवसंरचना और उपकरण तथा उन्नत वैज्ञानिक सहायता के इस्तेमाल से इसका परिदृश्य वैश्विक स्तर पर बदल गया है। इसके आधार पर, भारत सरकार ने खेलकूद करने वाले व्यक्तियों को वैज्ञानिक और उपकरणात्मक सहायता से उनकी मदद करने और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में उन्हें प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्ष जानकारी दिलाने की अनेक पहलें की हैं। देश में खेलकूदों के विकास और संवर्धन का संगठित और वैज्ञानिक ढांचा तैयार करने के उद्देश्य से प्रथम राष्ट्रीय खेलकूद नीति को 1984 में जारी किया गया। खूलकूदों का आधार राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक करने और उत्कृष्टता प्राप्त करने की दोहरी घोषणाओं के साथ खूलकूद नीति का दूसरा रूप 2001 में शुरू किया गया।

10.63 यद्यपि भारत के संविधान की सातवीं अनुसूची में खेलकूद राज्य का विषय है, तथापि केंद्र सरकार खेलकूदों के विकास और संवर्धन के कार्य के राज्यों के प्रयत्नों में सहयोग करती है। भारत सरकार ने अनेक योजनाएं उद्घोषित की है जिनका लक्ष्य नशामुक्त खेलकूदों, शहरी और ग्रामीण भारत के लिए अलग-अलग खेलकूद अवसंरचना विकास का संवर्धन करना खेलकूदों में उत्कृष्टत संवर्धन खेलकूद करने वाले व्यक्तियों के प्रोत्साहनों में इजाफा करना, खेलकूद सहायक संस्थाओं की सहायता करना और अशक्तता वाले व्यक्तियों के बीच खेलकूदों को बढ़ावा देना है। भारतीय खिलाड़ियों ने राष्ट्रमंडल खेलों 2010 और एशियाई खेलों 2010 में सराहनीय एवं प्रभावशाली प्रदर्शन किया। लंदन ओलंपिक खेल 2012 के लिए खिलाड़ी दल तैयार करने की दृष्टि से सरकार ने लंदन ओलंपिक खेलकूद उत्कृष्टता अभियान (ओपेक्स) 2012 का प्रवर्तन किया है। ओपेक्स 2012 देश के अंदर और विदेश दोनों के लिए व्यापक और गहन प्रशिक्षण देने और अंतरराष्ट्रीय खेलकूद आयोजनों में प्रतिस्पर्धात्मक जानकरी देने से जुड़े मुख्य क्षेत्रों की पहचान करता है। लंदन ओलंपिक खेलों के लिए खिलाड़ियों को तैयार करने की निधियां राष्ट्रमंडल खेल 2010 के पैमानों पर प्रदान की जा रही हैं। इसके लिए ठहरने, पोषक उपहार, वैज्ञानिक सहायता और दैनिक भत्ता जैसे कतिपय मामलों में निधियां बढ़ाई

गई हैं। ओपेक्स लंदन 2012 का बजट 258.39 करोड़ रुपए का है। युवा मामले और खेलकूदों का आवंटन बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि यह फिलहाल राज्य योजना के 0.50 प्रतिशत से अल्प है और केंद्रीय योजना आवंटनों के 0.16 और 0.72 प्रतिशत के बीच में है।

सांस्कृतिक सेवाएं

10.64 इस खंड में अन्य संबंधित सांस्कृतिक सेवाओं के अलावा 'मनोविनोद' और 'मनोरंजन' तथा 'आकाशवाणी' और 'दूरदर्शन' प्रसारण (राष्ट्रीय लेखा वर्गीकरण) शामिल है। सांस्कृतिक क्रियाकलाप आधुनिक उद्योगोत्तर ज्ञानाधारित अर्थव्यवस्था में वर्धमान रूपेण महत्वपूर्ण बनते जा रहे है। पूरे विश्व में उन्हें विकास और रोजगार सृजन के महत्वपूर्ण घटक तथा सांस्कृतिक पहचान के वाहक के रूप में मान्यता मिली है। सांस्कृतिक जीवन आर्थिक रूप से साध्य निजी तथा सार्वजनिक सेवा कार्य और सामाजिक एकता स्थापक बन गया है। संस्कृति और रोजगार के बीच सहसंबंध सकारात्मक रूप में बढ़ रहा है। अनेक लोग लेखकों, प्रकाशकों, पुस्तकाध्यक्षों, फोटोग्राफरों, मूर्तिकारों, चित्रकारों, गायकों, संगीतज्ञों, नृत्यसर्जकों, नर्तकों और अभिनेताओं के रूप में सांस्कृतिक क्रियाकलापों में संलग्न रहकर जीवक्षम रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। सांस्कृतिक क्रियाकलाप अन्य आर्थिक कार्यों में भी मदद करते हैं, इसका एक उदाहरण सांस्कृतिक पर्यटन है। भारत में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों पर्यटनों का बड़ा भाग सांस्कृतिक पर्यटन के वर्ग में रखा जा सकता है क्योंकि यह परंपरागत मेलों और उत्सवों सहित स्मारकों, संग्रहालयों, पुरातात्विक स्थलों और सांस्कृतिक विरासत की ओर ले जाता है।

10.65 सभी प्रकार की कला और संस्कृति के परिरक्षण और संवर्धन का उद्देश्य पूरा करने के लिए भारत सरकार विविध प्रकार के क्रियाकलाप शुरू कर रही है जो आधारिक स्तर पर सांस्कृतिक प्रयत्नों के रक्षण और प्रोत्साहन से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक आदान प्रदानों के संवर्धन; भारतीय प्राचीन दाय के परिरक्षक कार्यक्रमों से लेकर सामयिक रचनात्मक कलाओं के प्रोत्साहन तक की विभिन्नता में हैं। संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत 41 संगठनों का नेटवर्क मूर्त विरासत, अमूर्त दाय और ज्ञानपरक दाय के रक्षण, विकास और संवर्धन का कार्य कर रहा है। नाट्य दृश्य और साहित्यिक कलाओं में संलग्न व्यक्तियों, व्यक्तियों के समूहों और सांस्कृतिक संगठनों को वित्त सहायता देने वाली अनेक योजनाएं और कार्यक्रम भी हैं। 3,555 करोड़ रु॰ का कुल आबंटन ग्यारहवीं योजनावधि में इस क्षेत्र को किया गया।

10.66 रचनात्मक उद्योग में सांस्कृतिक दाय; मुद्रित सामग्री और साहित्य, संगीत और प्रदर्शक कलाएं; दृश्य कलाएं, श्रव्य-दृश्य प्रचार साधन, सिनेमा, दूरदर्शन, आकाशवाणी और फोटाग्राफी; तथा सामाजिक सांस्कृतिक क्रियाकलाप संग्रहालय , अभिलेखागार शामिल हैं। रचनात्मक उद्योग के व्यापार का मालों और सेवाओं का वर्ग मोटे तौर पर बनाया जा सकता है। अंकटाड के अनुसार (रचनात्मक अर्थव्यवस्था पर अंकटाड- वेब आधारित ब्राउजर) 2010 में रचनात्मक उद्योग मालों का वैश्विक निर्यात 2002 से 8.6 प्रतिशत केसीएजीआर पर बढ़ते हुए 383 बिलियन अमरीकी डालर पर होने का अनुमान था। भारत का स्थान रचनात्मक मालों के विश्व निर्यातों में 3.6 प्रतिशत के हिस्से के साथ रचनात्मक मालों के आठवें विशालतम निर्यातक का है निरपेक्ष दृष्टि से भारत ने 13.8 बिलियन अमरीकी डालर के मूल्य का रचनात्मक मालों का निर्यात 2010 में किया। इसमें 17.7 प्रतिशत का सीएजीआर वैश्विक औसत से कहीं अधिक है। अंकटाड ने 2010 में रचनात्मक सेवाओं का विश्वनिर्यात 13.8 बिलियन अमरीकी डालर होने का अनुमान लगाया जिसमें 15.4 प्रतिशत के सीएजीआर के साथ वृद्धि हुई है। रचनात्मक सेवाओं के विश्वनिर्यात में 2.3 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ भारत का 13वां स्थान है। भारत ने 26 प्रतिशत सीएजीआर पर, 2010 में रचनात्मक सेवाओं में 4 बिलियन अमरीकी डालर का निर्यात किया।

10.67. अरनेस्ट एंड यंग द्वारा दी गई एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय मीडिया और मनोरंजन उद्योग का मूल्य 2010 में 16.3 बिलियन अमरीकी डालर पर आंका गया है और इसका अगले चार वर्षों में 12 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ना अनुमानित है, जिससे इसका मूल्य 26 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच जाएगा। भारतीय मीडिया और मनोरंजन सेवा उद्योग में दृश्य मनोरंजन सेवाएं, (प्रसारण और केबल टेलीविजन, फिल्में) मुद्रण (अखबार, किताबें, आवधिक पत्रिकाएं), और श्रव्य मनोरंजन सेवाएं (रेडियो, संगीत) शामिल हैं। इसके अतिरिक्त इंटरनेट सेवाएं भी नेटवर्कों के जरिए ऐसे विषय वितरित करती हैं। नेटवर्कों, उपकरणों और विषयों के इस द्रुतगामी अभिसरण से भारतीय मीडिया और मनोरंजन उद्योग की गतिशीलता में नाटकीय रूप से सुधार होने का अनुमान है। भारत में 700 से अधिक टेलीविजन चैनल और 100 मिलियन पे-टीवी कुटुम्बों के होने का अनुमान है। टेलीविजन वितरण उप-खंड पर बहुत अधिक विखरे हुए एनॉलॉग केबल का प्रभुत्व है जिसमें लगभग 60,000 स्थानीय केबल ऑपरेटर और 100 मल्टी-सिस्टम ऑपरेटर शामिल हैं। केबल टेलीविजन नेटवर्क (विनियम) संशोधन अधिनियम, 2011 ने डिजीटीकरण सुकर बनाने के लिए एक कानूनी ढांचा तैयार किया है। 30 जून, 2012 तक चार महानगरीय केबल टेलीविजन में डिजीटल हो जाएंगे और देश के शेष नगर 31 दिसंबर, 2014 तक। यह अंकीकरण प्रसारण को पुर्नपरिभाषित करेगा और सभी पणधारकों को लाभान्वित करेगा। सामान्य मनोरंजन चैनलों के मामले में विषय वस्तु के विनियमन के लिए प्रसारणकर्ताओं द्वारा भारत सरकार के परामर्श से एक स्व-विनियमनकारी प्रतंत्र शुरू किया गया है और 1 जुलाई, 2011 से एक प्रसारण विषयक शिकायत परिषद् को प्रचालनात्मक बनाया गया है। सरकार द्वारा नियंत्रित आकाशवाणी के साथ 245 निजी रेडियो कम्पनियां भी हैं जो लगभग 237 रेडियो स्टेशनों का

प्रचालन कर रही हैं। एफएम चरण-1 नीति की घोषणा के साथ वर्ष 1999 में एफएम रेडियो को निजी क्षेत्र के लिए खोल दिया गया। चरण II की घोषणा वर्ष 2005 में की गई। अभी तक भारत के 86 शहरों को निजी एफ एम स्टेशनों के अंतर्गत शामिल किया गया है। तीसरे चरण में सरकार ने देश भर में विस्तारित 245 शहरों के 839 एफ एम चैनलों की ई-नीलामी करने का निर्णय लिया है। इससे लोगों के लिए रोज़गार तथा आय के नए नए अवसर खुलने के अलावा लोगों के लिए इन्फोटेनमेंट का एक नया युग शुरू होगा। संगीत के उप-खंड में, फिल्मी संगीत की बिक्री का हिस्सा सम्पूर्ण भारत में संगीत की बिक्री का लगभग दो-तिहाई है। भारत का विशाल मोबाईल ग्राहकी आधार भी संगीत तथा रेडियो उप-खंड के संवृद्धि अवसरों में योगदान दे रहा है।

10.68 वर्ष में 20 से अधिक भाषाओं में 1000 से अधिक फिल्म बनाने वाला भारतीय फिल्म उद्योग विश्व में सबसे बड़ा फिल्म उद्योग है। फिल्म उद्योग आई सी टी क्षेत्र को एनीमेशन, विजुअल इफेक्टस 3डी का रूपांतर जैसी सेवाओं तथा निर्माण-पश्च सेवाओं के बहिस्रोतण द्वारा इसकी संवृद्धि में योगदान दे रहा है। भारतीय फिल्म उद्योग आई सी टी क्षेत्र के सहयोग के जरिए यथा डीवीडी, संगीत सीडी, मोबाईल डाऊनलोड तथा ऑनलाईन गेमिंग के जरिए भी अतिरिक्त राजस्व का सृजन कर रहा है। मनोरंजन कर की उच्च दरें तथा राज्यों में कर संरचना में एक समानता का अभाव फिल्म उद्योग की संवृद्धि को बाधित करने वाले प्रमुख कारक हैं। सेवा कर तथा मनोरंजन कर को समाहित कर वस्तु एवं सेवा कर को अपना कर फिल्म उद्योग की वृद्धि को संवर्धित किया जा सकता है। पाइरेसी भारतीय फिल्म क्षेत्र के लिए एक अन्य चुनौती है। इसे वर्तमान अपेक्षाओं के संगत बनाने तथा पाइरेसी पर रोक लगाने के लिए, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय सिनेमेटोग्राफ अधिनियम 1952 को संशोधित करने की प्रक्रिया में रत है भारत ने फिल्मों तथा दूरदर्शन कार्यक्रमों के सह निर्माण के लिए छः देशों के साथ उनके सृजनात्मक, कलात्मक, तकनीकी, वित्तीय तथा विपणन संसाधनों का लाभ उठाने के उद्देश्य से सह-निर्माण करारों पर हस्ताक्षर किए हैं। वर्ष 2011-12 के दौरान, मंत्रालय ने 20 विदेश निर्माण कंपनियों को फिल्में शूट करने की अनुमति दे दी है। सेवाओं में भारत की संवृद्धि तथा व्यापार में इस उदीयमान क्षेत्र की संभाव्यता को देखते हुए, कर क्रेडिट जैसे मुद्दों का निवारण कर भारत में विदेशों में भारतीय फिल्म उद्योग के व्यवसाय को पुनःअवस्थित करने हेतु प्रयास किए जाने अपेक्षित हैं जिनसे भारत में क्रियाकलाप बढ़ेंगे और साथ ही रोजगार का सृजन भी होगा।

10.69 प्रकाशन उप-खंड में, भारत में 23 अनुसूचित भाषाओं (अंग्रेजी सहित) और अनेक गैर-अनुसूचित भाषाओं में परिचालित लगभग 77,384 समाचार पत्र/पत्रिकाएं पंजीकृत हैं। 75 प्रतिशत से अधिक के साक्षरता स्तर की तुलना में निम्न पाठक पैठ (लगभग 30 प्रतिशत) संवृद्धि की संभाव्यता को रेखांकित करता है। देश में व्ययित लगभग 42 प्रतिशत विज्ञापन राशि प्रिंट मीडिया के जरिए व्यय की जाती है इंटरनेट सेवाओं की पैठ भी भारत में आनलाईन समाचार पठन में योगदान दे रहा है। प्रिंट मीडिया क्षेत्र में प्रिंट मीडिया के समाचार भिन्न अर्थात् विशिष्ट/तकनीकी/वैज्ञानिक क्षेत्र में 100 प्रतिशत तक विदेशी निवेश अनुमत है जबकि समाचार पत्र तथा समाचारों एवं सामयिक विषयों से संबद्ध आवधिक पत्रिकाओं का प्रकाशन करने वाली भारतीय कम्पनियों में 26 प्रतिशत तक का विदेशी निवेश अनुमत है। पूर्णतया स्वामित्वाधीन अनुषंगी कम्पनी के माध्यम में अपने स्वयं के समाचारपत्रों के फैसीमिल संस्करण प्रकाशित कर रहे विदेशी प्रकाशन गृहों के मामले में 100 प्रतिशत तक विदेशी निवेश अनुमत है।

चुनौतियां तथा संभावनाएं

संभावनाएं

10.70 वैश्विक आर्थिक संकट के उतार चढ़ाव के वर्षों के दौरान भी लगभग 10 प्रतिशत की सुस्थिर वृद्धि को कायम रखते हुए भारत का सेवा क्षेत्र समुत्थनशील रहा है। यह तब हुआ जब समग्र सकल घरेलू उत्पाद संवृद्धि वर्ष 2008-09 में तीव्रता से गिर कर 6.7 प्रतिशत रह गई। विभिन्न सेवाओं की संवृद्धि दरों का विश्लेषण दर्शाता है कि यह समुत्थान शीलता कुछ अंश तक सरकार की उच्च सामाजिक व्यय की नीतियों के कारण तथा सरकारी कर्मचारियों के लिए नए संशोधित वेतनमान के तहत वेतन बकायों के लिए प्रतिबद्धताओं के कारण था जो वर्ष 2008-09 तथा 2009-10 में समुदाय, सामाजिक तथा वैयक्तिक सेवाओं में 12.5 प्रतिशत तथा 12.0 की अति उच्च वृद्धि दरों में परिणामी हुई। लोक प्रशासन तथा रक्षा में वर्ष 2006-07 तथा 2007-08 में 1.9 प्रतिशत तथा 7.6 प्रतिशत की तुलना में इन दो वर्षों में क्रमशः 19.8 प्रतिशत तथा 18.2 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई। तथापि, वैश्विक संकट का प्रभाव 2008-09 तथा 2009-10 में व्यापार, होटल तथा रेस्तरां एवं निर्माण श्रेणियों में स्पष्ट था तथा स्थावर सम्पदा वास स्वामित्व और व्यवसाय सेवाओं में अग्रेनीत प्रभाव के साथ तथा वर्ष 2009-10 में बैंकिंग और बीमा क्षेत्र का कुछ सीमा तक स्पष्ट था।

10.71 2011-12 में आगे बढ़ते हुए, सेवाओं की वृद्धि में यद्यपि थोड़ा सा संतुलन आया है और ये 9.4 प्रतिशत हो गई है (2010-11 में भी), चिंता का कोई कारण नहीं है क्योंकि यह लोक प्रशासन तथा रक्षा सेवाओं में तीव्र गिरावट के कारण हैं जो सरकार के राजकोषीय समेकन को परिलक्षित करता है। वस्तुतः व्यापार, होटलों तथा रेस्तरां, परिवहन, भंडारा और संचार में वृद्धि 11.2 प्रतिशत पर अधिक सशक्त हैं तथा खुदरा क्षेमक संवृद्धि के 2012-13 में अधिक मजबूत होने की आशा है। ब्याज दरों के बढ़ने से, वास्तविक चिंता स्थावर सम्पदा/आवास स्वामित्व तथा व्यवसाय सेवा खंड संबंधी होगी जिसकी वृद्धि में गिरावट होनी आरम्भ हो गई है तथा निर्माण सेवाओं की संवृद्धि लगभग आधी हो गई है। घरेलू अर्थव्यवस्था में सेवा सेक्टर का दृष्टिकोण बाहय रूप से क्षेत्र

की संभावनाओं के साथ जुड़ा है। हालांकि साफ्टवेयर मेगा निर्यात स्थिर बने हुए हैं, यूरो क्षेत्र में होने वाले घटनाक्रमों में इस क्षेत्र में कुछ मंदन आ सकता है। अनुकूल व्यवसाय सेवा निर्यात, जिनमें ह्रास के चिन्ह पहले ही दर्शित हो चुके हैं, में संभवत: कोई सुधार नहीं होगा। अन्य दो प्रमुख सेवाओं में, परिवहन पहले ही सर्व-समय निम्न स्तर पर बाल्टिक शुल्क सूचकांक से प्रभावित हुआ है यद्यपि यह एक अस्थायी संवृत्ति होगी। यूरो जोन पर्यटकों की जेबों पर प्रभाव पड़ने से यात्रा एवं पर्यटन भी प्रभावित होंगे, इससे भारत जैसे सस्ते गंतव्यों की तलाश कर रहे छुटटी मनाने निकले पर्यटकों के बढ़े हुए अन्तर्वाह के चलते पर्यटक अंतर्वाह पैटर्न में बदलाव भी आ सकता है। दक्षिण एशिया, पूर्वी एशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया से पर्यटकों में वृद्धि इस क्षेत्र की और सहायता कर सकते हैं। हालांकि, सकल घरेलू उत्पाद पर व्यापार क्षेत्र का निवल प्रभाव हमेशा नकारात्मक रहा है, यह और ह्रासित हो सकता है यदि सकल घरेलू उत्पाद को निवल सेवाओं द्वारा कम राहत उपलब्ध कराई जाती है। तथापि, सेवाओं के मामले में घरेलू अर्थव्यवस्था अधिक प्रबल है तथा उपलब्ध राजकोषीय स्थान या नव सृजित राजकोषीय गुंजाइश के अंतर्गत समुदाय, सामाजिक तथा वैयक्तिक सेवाओं में सरकारी व्यय के कोई परिवर्तन संबंधित क्षेत्रों में अनुषंगी प्रभावों के साथ सेवा क्षेत्र में वृद्धि की संभावनाओं को सुदृढ़ बना सकता है।

चुनौतियां

10.72 हिस्सों तथा संवृद्धि दोनों के अर्थ में प्रबल यह क्षेत्र न केवल राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए बल्कि अनेक राज्यों के लिए भी एक संवृद्धि चालक है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में तथा अधिकतर राज्यों, दोनों में रोजगार के अर्थ में यह केवल कृषि की तुलना में दूसरे स्थान पर है। कृषि क्षेत्र में कार्यों के अकुशल या अर्द्ध कुशल स्वरूप के विपरीत यह क्षेत्र अनेक क्रियाकलापों में अति कुशल से ले कर अकुशल के बीच विविध कार्य अवसर प्रदान करता है। अत: विनिर्माण क्रियाकलाप में पुनरोत्थान के साथ साथ सेवाएं समग्र रोजगार को प्रमुख संचालक बन सकती हैं। पण्य क्षेत्र के विपरीत सेवाक्षेत्र एक निबल विदेशी मुद्रा अर्जन है जिसमें कुछ सेवाओं के निर्यात कई गुना बढ़ रहे हैं। यह प्रमुख एफडीआई आकृष्टकर्ता क्षेत्र भी है जिसमें पांच सेवाओं का स्थान देश में एफडीआई आकृष्ट करने वाले क्षेत्रों की सूची में सर्वोपरि है। इस प्रकार, भारत का सेवा क्षेत्र एक असीमित समुद्र की भांति है जिसमें ढ़ेरों अवसरों के साथ-साथ नई चुनौतियां भी हैं।

10.73 पहली चुनौती न केवल सेवा क्षेत्र में वर्तमान संवृद्धि संवेग का अनुरक्षण करना है बल्कि इसे में त्वरित करना भी है। यह कार्य कठिन होने के बावजूद असम्भव नहीं है क्योंकि हमने साफ्टवेयर तथा दूरसंचार जैसे केवल कुछ सेवा क्षेत्रों का ही दोहन किया है और वह भी केवल अंशत: वस्तुत: प्रत्येक महत्वपूर्ण सेवा क्षेत्र अवसर का भंडारगृह है। साफ्टवेयर तथा दूरसंचार में भी घरेलू अर्थव्यवस्था में पर्याप्त अदोहित संभावना है। सौफ्टवेयर टेलीकॉम कम्नीकेशन उच संवृद्धि उत्प्रेरक बल हो सकता है जिसके सकारात्मक प्रभाव अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ेंगे तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का मामला करते हुए इन क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं। खुदरा व्यापार के साथ यह संयोजन ग्रामीण अर्थव्यवस्था की शक्ल को ही बदल सकता है। पर्यटन क्षेत्र जो स्वयं अपने आप में एक उद्योग है, भारत के लिए अवसर की एक अन्य खान है। हालांकि इस क्षेत्र की संभाव्यता के बारे में काफी शोर है, इसे वास्तविकता बनाने के लिए प्रयास किए जाने आवश्यक है। नौवहन एक अन्य प्रमुख सेवा है जो भारत के स्वयं अपने पण्य व्यापार द्वारा प्रदत्त अवसरों का दोहन करके संवृद्धि में वर्धन कर सकती है। वर्तमान में भारतीय जहाज औद्योगिक व्यापार के केवल 9 प्रतिशत का संवहन करते है जो किन्ही भी मानकों के अनुसार अत्यंत निम्न है। यदि संभाव्य नहीं, तो कम से कम भारत के मौजुदा व्यापार के एक महत्वपूर्ण भाग पर पकड बनाने के लिए इस क्षेत्र में विशाल निवेश और आधुनिकीकरण किए जाने की जरूरत है। पत्तन क्षेत्र, जिसमें भविष्य के नौभार के आधार पर श्रीलंका जैसे देश अन्य देशों जैसे भारत पर निर्भर करते हैं, ऐसा अन्य क्षेत्र है जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। कारोबार क्षेत्र, जिसमें कई गतिशील सेवाएं समाहित हैं, एक आगे बढ़ता हुआ क्षेत्र है। वित्तीय क्षेत्र, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा बाह्य संभाव्यता और आंतरिक अवसर वाले ऐसे अन्य उपयुक्त क्षेत्र हैं, जिन्हें अधिक समावेशी विकास की उद्देश्य प्राप्ति के लिए तदनुकूल तैयार किया जा सकता है। (अध्याय 13 भी देखें)।

10.74 दूसरी चुनौती है कारोबार और वित्तीय सेवाओं जैसी कुछ अनुकूल सेवाओं को अधिक स्थायी बनाना और बाहरी प्रघातों से कम संवेदनशील बनाना। यद्यपि इन क्षेत्रों को इस अति वैश्वीकृत विश्व में बाहरी प्रघातों से पूर्णतया बचाया नहीं जा सकता, इन्हें कम से कम सॉफ्टवेयर और टेलीकॉम सेवाओं की तरह स्थायी बनाने के लिए प्रयास किए जाने होंगे। ऐसा सॉफ्टवेयर और टेलीकॉम सेवाओं की प्रगति पर निवेश करके और घरेलू अर्थव्यवस्था में उन क्षेत्रकों में पैठ बनाकर किया जा सकता है, जहां प्रचुर अवसर मौजूद हैं। अब हम इनमें से अधिकतर क्षेत्रों में घरेलू विनियमों, के संबंध में तीसरी चुनौती पर आते हैं। यद्यपि डब्ल्यूटीओ में, भारत भारत अन्य देशों के इस प्रकार के विनियमों को हटाने संबंधी वार्ताओं में सबसे आगे रहा है, हमें राष्ट्रीय स्तर पर विनियमनकारी सुधार शुरू करने में भी आगे आना होगा, क्योंकि ये विनिमय सेवा क्षेत्र की और संवृद्धि के मार्ग में बाधा बन सकते हैं। सेवा क्षेत्र में आंकड़े संबंधी समस्याओं का समाधान करना, ऐसा अन्य क्षेत्र है जिसमें एकांकी प्रयासों में गति और समेकन दोनों की आवश्यकता है। बेहतर और समन्वित कार्यनीतियों के जरिए सेवा क्षेत्र के विविध उप-क्षेत्रों की चुनौतियों का समाधान अर्थव्यवस्था के लिए घातीय लाभों में परिणत होगा।